व्याकरण की उपक्रमणिका ।

श्रीयुत बाबू प्यारीमोहन बन्द्योपाध्याय

ने

श्रीयुत पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कृत पुस्तक से

अनुवाद किया ।

बाबू शीतलप्रसाद चट्टोपाध्याय

ने

संशोधन करके प्रचारित किया ।

THE

ELEMENTS OF

SANSKRIT GRAMMAR

IN HINDI.

TRANSLATED FROM
PANDIT ISWARACHANDRA VIDYASAGARA'S
BENGALI UPAKRAMANIKA,

BY THE LATE

BABU PEAREE MOHUN BANERJEE,

EDITED AND EMENDED BY

SITAL PRASAD CHATTERJI,
Vakil, High Court, N. W. P.

PRINTED AT THE DINAPORE "CENTRAL" PRESS.

1891.

Price 8 Annas.] [मूल्य ॥)

भूमिका ।

संस्कृत व्याकरण अति कठिन होने के कारण बालकों की समझ में शीघ्र नहीं आता और तोते के समान जो उनको सिखलाया जाता है उस से बहुत काल व्यर्थ नष्ट होता है इस कारण बालकों के निमित्त इस पुस्तक को प्रस्तुत किया है इससे हमारे देश के लड़कों का कुछ भी उपकार हो तो मैं अपने परिश्रम को सफल जानूंगा । "यूनीवर्सिटी" अर्थात् प्रधान विद्यालय की परीक्षा के लिए अंगरेजी और संस्कृत अथवा अरबी भाषा का ज्ञान अवश्य है इस लिए अब प्रायः बालकों को संस्कृत पढ़ना पड़ेगा और संस्कृत भाषा के समान और कोई भाषा कम उत्तम है जो यह क्षुद्र पुस्तक सामान्यतः लोगों के मनों को प्रिय लगी तो मेरा विचार है कि प्रसिद्ध पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की व्याकरण कौमुदी को मैं हिन्दी भाषा में उलथा करूं । और पहिली बार छपने में जो अति आवश्यक बातें भूल हो से रह गई रहीं सो पण्डितों की सम्मति अनुसार बढ़ा दी गई ।

इस पुस्तक पर रजिष्टरी कराई गई है अतएव यदि मेरे अनुमति बिना इसको कोई छपावे तो कानून अनुसार दण्ड पावेगा ।

वाराणसी
१ अक्तुबर सन् १८७०

श्री प्यारीमोहन बन्द्योपाध्याय ।

पृष्ठ

स्वरान्त स्त्री लिङ्ग । ... २४

आकारान्त शब्द ... ”
इकारान्त शब्द ... ”
ईकारान्त शब्द ... २५
उकारान्त शब्द ... २६
ऊकारान्त शब्द ... २७
ऋकारान्त शब्द ... ”
ओकारान्त शब्द ... २८
औकारान्त शब्द

स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग । ... २८

अकारान्त शब्द ... ”
इकारान्त शब्द ... २९
उकारान्त शब्द

व्यञ्जनान्त शब्द पुंलिङ्ग । ... २९

हकारान्त शब्द ... ३०
वकारान्त शब्द ... ”
रेफान्त शब्द ... ”
नकारान्त शब्द ... ३१
तकारान्त शब्द ... ३२
दकारान्त शब्द ... ”
धकारान्त शब्द ... ”
पकारान्त शब्द ... ३३
षकारान्त शब्द ... ३४
मकारान्त शब्द ... ३७
सकारान्त शब्द

स्त्री लिङ्ग । ... ३८

चकारान्त शब्द ... ३९
जकारान्त शब्द ... ”
षकारान्त शब्द

पृष्ठ

रेफान्त शब्द ... ३९
हकारान्त शब्द ... ४०
षकारान्त शब्द ... ,,
सकारान्त शब्द ... ,,

नपुंसक लिङ्ग ।

तकारान्त शब्द ... ४१
नकारान्त शब्द ... ,,
सकारान्त शब्द ... ४२
सर्वनाम ... ४३
संख्यावाचक शब्द ... ४९
अव्यय शब्द ... ५१
स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय ... ५२
कारक ... ,,
विभक्ति का निर्णय ... ५४
विशेष्य विशेषण ... ५६
तिङन्त प्रकरण ... ५७
अकर्मक क्रिया ... ५८
सकर्मक क्रिया ... ,,

धातु रूप अकर्मक ।

भू धातु होना ... ५८
स्था धातु स्थिर रहना ... ५९
हस धातु हसना ... ६०
रुद धातु रोना ... ,,
पत धातु पतन गिरना ... ६१
सकर्मक कृ धातु करण करना ... ६२
गम् धातु गमन चलना ... ,,
श्रु धातु श्रवण सुनना ... ६३
दृश धातु दर्शन देखना ... ६४
दा धातु देना ... ,,

पृष्ठ

... ६५
ग्रह धातु ग्रहण लेना ... ,,
प्रच्छ धातु पूछना ... ६६
ब्रू धातु कथन बोलना ... ६७
भक्ष धातु भोजन खाना .. ,,
पा धातु पान पीना ... ६८
इष् धातु इच्छा ... ६९
ज्ञा धातु ज्ञान जानना ... ,,
प्रपूर्वक आप धातु प्राप्ति पावना ... ७०
त्यज धातु त्याग ... ,,
कर्तृ वाच्य ... ७१
कर्म वाच्य ... ,,
भाव वाच्य ... ,,
कृदन्त ... ७३
समास ... ,,
कर्मधारय ... ७७
तत्पुरुष ... ,,
द्वन्द्व ... ७८
बहुव्रीहि ... ,,
द्विगु, अव्ययीभाव ... ७९
तद्धित प्रत्यय ... ८१
सरल संस्कृत पाठ

श्रीगणेशाय नमः ।

व्याकरण की उपक्रमणिका ।

वर्ण निर्णय ।

अ इ उ, क ख ग, इत्यादि एक एक को वर्ण कहते हैं । वर्ण दो प्रकार के हैं ; स्वर अथवा अच्, व्यञ्जन अथवा हल् ।

स्वर वर्ण ।

२] अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ इन्हीं त्रयोदश वर्णों को स्वर कहते हैं । स्वर तीन प्रकार के हैं ; ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत । अ इ उ ऋ ऌ, इन पांच वर्णों को ह्रस्व स्वर और एक मात्रिक कहते हैं । आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ, इन आठ वर्णों को दीर्घ स्वर और द्विमात्रिक कहते हैं । आ३ ई३ ऊ३ ॠ३ ऌ३ ए३ ऐ३ ओ३ औ३ इन नव तीन अङ्क वालों को प्लुत स्वर और त्रिमात्रिक कहते हैं । इन चारों ह्रस्वों के प्रत्येक अठारह २ भेद जानना । और प्रत्येक पांचों के बारह २ भेद जानना । यथा, ह्रस्व उदात्त अनुनासिक । ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक । ह्रस्व स्वरित अनुनासिक । ह्रस्व उदात्त निरनुनासिक । ह्रस्व अनुदात्त निरनुनासिक । ह्रस्व स्वरित निरनुनासिक । दीर्घ और प्लुत इन दोनों को भी इसी प्रकार से जानना । और किसी वर्णों को व्यञ्जन और किसी को स्वर क्यों कहते हैं, इसका भेद यह है कि जो वर्ण स्वर की सहायता चाहते हैं अर्थात् स्वर के बिना जिन्हों का उच्चारण नहीं हो सक्ता वे वर्ण व्यञ्जन अर्द्धमात्रिक और हल कहे जाते हैं और जो वर्ण व्यञ्जन की सहायता बिना उच्चारण में आते हैं वे वर्ण स्वर और अच कहलाते हैं, और ह्रस्व, दीर्घ, और प्लुत स्वर अथवा अच् कहे जाते हैं, इसके भेद ये हैं, जिन स्वरों के उच्चारण में थोड़ा काल लगता है वे ह्रस्व कहलाते हैं और जिनके उच्चारण में इससे दूना काल लगे वे दीर्घ कहलाते हैं, और जिनहों के उच्चारण में तिगुना काल लगे वे प्लुत कहलाते हैं

किन्तु प्लुत स्वर के आगे तीन के अङ्क का चिन्ह रहता है । लृकार दीर्घ नहीं है। ए ऐ ओ औ ये चारों वर्ण ह्रस्व नहीं है।

व्यञ्जन वर्ण ।

३] क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह; ये ३३ व्यञ्जन वर्ण बोले जाते हैं। इनके मध्य में क से लेकर म पर्यन्त २५ स्पर्श वर्ण बोले जाते हैं। सकल स्पर्श वर्ण पांच वर्ग में बिभक्त हैं। क ख ग घ ङ, ये ५ कवर्ग हैं। च छ ज झ ञ, ये ५ चवर्ग हैं। ट ठ ड ढ ण, ये ५ टवर्ग हैं। त थ द ध न, ये ५ तवर्ग हैं। प फ ब भ म, ये ५ पवर्ग हैं। य र ल व, ये ४ अन्तःस्थ वर्ण बोले जाते हैं। श ष स ह, ये ४ ऊष्म वर्ण बोले जाते हैं। अनुस्वार और विसर्ग, एक बिन्दु अनुस्वार कहलाता है, और स्वर के अनन्तर दो बिन्दु विसर्ग कहलाता है। इन दो वर्णों और जिह्वामूलीय* और उपध्मानीय का स्वर और व्यञ्जन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है तो भी रूप के सिद्धि में उपकारक होते हैं इस लिये अयोगवाह कहलाते हैं।

वर्णों के उच्चारण के स्थान ।

४] अ आ आ३ क ख ग घ ङ ह, इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ है। इसलिये ये कण्ठ्यवर्ण बोले जाते हैं।

५] इ ई ई३ च छ ज झ ञ य श, इनके उच्चारण का स्थान तालु है। इसलिये ये तालव्य वर्ण बोले जाते हैं।

६] ऋ ॠ ॠ३ ट ठ ड ढ ण र ष, इनके उच्चारण का स्थान मूर्द्धा है। इसलिये ये मूर्द्धन्य वर्ण बोले जाते हैं।

७] ऌ ॡ ॡ३ त थ द ध न ल स, इनके उच्चारण का स्थान दन्त है। इसलिये ये दन्त्य वर्ण बोले जाते हैं, और इनका उच्चारण स्थान दन्त में युक्त देश भी है क्योंकि बिना दांतवाले भी इन्हीं का उच्चारण करते हैं इसलिये दन्तसंयुक्त देश स्थान है ।

८] उ ऊ ऊ३ प फ ब भ म ⌣प ⌣फ, इनके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है। इनका नाम ओष्ठ्य वर्ण है ।

---

* जिह्वामूलीय का जिह्वामूलही स्थान है इससे जिह्वामूलीय कहलाते हैं। जैसे ⌣क ⌣ख इन दोनोंही के पूर्व यह चिन्ह रहता है ।

९] ए ऐ ऐ३ इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ और तालु है । इनका नाम कण्ठतालव्य वर्ण है ।

१०] ओ औ औ३ इनका उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ है । इनका नाम कण्ठौष्ठ्य वर्ण है ।

११] अन्तःस्थ वकार का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है । इस का नाम दन्त्यौष्ठ्य वर्ण है ।

१२] अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है ; इसलिये इस का नाम अनुनासिक है ।

१३] विसर्ग आश्रयस्थान भागी है अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण के अनन्तर आता है, तब उसका उच्चारण स्थान उस विसर्ग का उच्चारण स्थान होता है ।

१४] ङ ञ ण न म, ये वर्ण नासिका से भी उच्चारण होते हैं । इन को अनुनासिक भी कहते हैं। और ङ का कण्ठ ञ का तालु ण का मूर्द्धा न का दन्त और म का ओष्ठ स्थान भी जानना ।

वर्णों के उच्चारण और प्रयत्न का नियम ।

१५ । क् च् ट् त् प् अर्थात् कवर्ग इत्यादि ये पांचो वर्गों का स्पृष्ट प्रयत्न । य र ल व का ईषत् स्पृष्ट प्रयत्न । श ष स ह का ईषद्विवृत प्रयत्न । और स्वरों का विवृत प्रयत्न परन्तु ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में संवृत प्रयत्न । रूप सिद्धि में सब स्वरों का विवृतही है ।

सन्धिप्रकरण ।

१६ । दो वर्ण परस्पर निकटस्थ होने से मिल जाते हैं । इस मिलने का नाम सन्धि है ; सन्धि दो प्रकार की है, स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि । स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण की जो सन्धि होती है उसका नाम स्वर सन्धि है, जब स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण की सन्धि नहीं होती इसको प्रकृतिभाव कहते हैं और प्रकृतिभाव नाम ज्यों का त्यों रहना अर्थात् युक्त न होना है । व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण की अथवा व्यञ्जन वर्ण के साथ स्वर वर्ण की जो सन्धि होती है उसका नाम व्यञ्जन सन्धि है ।

स्वर सन्धि ।

१७। यदि अकार के अनन्तर अकार वा आकार होवे तो दोनों मिलकर आकार होता है, और आकार पूर्व वर्ण संयुक्त होता है। यथा मम अङ्गः, ममाङ्गः ; उत्तम अङ्गम्, उत्तमाङ्गम् ; अद्य अवधि, अद्यावधि ; रत्न आकरः, रत्नाकरः ; देव आलयः, देवालयः ; कृप आसनम्, कृपासनम् ; देव अर्घः, देवार्घः ; दण्ड आनयनम्, दण्डानयनमित्यादि ।

१८। यदि आकार के अनन्तर अकार वा आकार होवे तो दोनों मिलकर आकार होजाता है। और आकार में पूर्व वर्ण युक्त हो जाता है। यथा, दया अर्णवः, दयार्णवः ; महा अर्घः, महार्घः ; लता अन्तः, लतान्तः ; महा आशयः, महाशयः ; गदा आघातः, गदाघातः ; विद्या आलयः, विद्यालयः ; विद्या अस्ति, विद्यास्ति ; दया अस्ति, दयास्ति ।

१९। यदि इकार के अनन्तर इ अथवा ई होवे तो दोनों मिलकर दीर्घ ईकार हो जाता है ईकार पूर्व वर्ण में युक्त हो जाता है। यथा गिरि इन्द्रः, गिरीन्द्रः ; अति इव, अतीव ; प्रति इतिः, प्रतीतिः ; कवि ईश्वरः, कवीश्वरः ; क्षिति ईशः, क्षितीशः ; प्रति ईक्षा, प्रतीक्षा ।

२०। यदि ईकार के आगे इ किंवा ई रहै तो दोनों मिलकर दीर्घ ईकार होता है ; ईकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है ; यथा, मही इन्द्रः, महीन्द्रः ; महती इच्छा, महतीच्छा ; लक्ष्मी ईशः, लक्ष्मीशः ; पृथ्वी ईश्वरः, पृथ्वीश्वरः ; सती ईशः, सतीशः ।

२१। यदि ह्रस्व उकार के आगे उ किंवा ऊ रहै तो दोनों मिलकर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, विधु उदयः, विधूदयः ; मधु उत्सवः, मधूत्सवः ; स्वादु उदकम्, स्वादूदकम् ; साधु उक्तम्, साधूक्तम् ; लघु ऊर्मिः, लघूर्मिः ; गुरु ऊहः, गुरूहः ।

२२। यदि दीर्घ ऊकार के आगे उ किंवा ऊ रहै तो दोनों मिलकर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है। यथा, वधू उत्सवः, वधूत्सवः ; स्वयम्भू उदयः, स्वयम्भूदयः ; भू ऊर्द्धम्, [illegible] ऊनम्, वधूनम् ।

२३। यदि ऋकार के आगे ऋकार रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ॠकार होते हैं। ॠकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा पितृ ऋणम्, पितॄणम्; भ्रातृ ऋद्धिः, भ्रातॄद्धिः।

२४। यदि पद के अन्त में स्थित अकार अथवा आकार के अनन्तर अथवा इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, के आगे ह्रस्व ऋ ऌ रहे तो सन्धि का विकल्प जानना। यथा, ब्रह्म ऋषिः, ब्रह्मर्षिः; राजा ऋषिः, राजर्षिः; दधि ऋच्छति, दध्यृच्छति; मधु ऋच्छति, मध्वृच्छति; पितृ ऋणम्, पितॄणम्; भ्रातृ ऋद्धिः, भ्रातॄद्धिः।

२५। यदि अकार के आगे इ किंवा ई रहे तो दोनों मिलकर एकार होता है। एकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है। यथा, देव इन्द्रः, देवेन्द्रः; पर्ण इन्दुः, पूर्णेन्दुः; गण ईशः, गणेशः; अव ईक्षणम, अवेक्षणम्।

२६। यदि आकार के आगे इ किंवा ई रहे तो दोनों मिलकर एकार होते हैं। एकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, महा इन्द्रः, महेन्द्रः; लता इव, लतेव; रमा ईशः, रमेशः; महा ईश्वरः, महेश्वरः।

२७। यदि अकार के आगे उकार किंवा ऊकार रहे तो दोनों मिलकर ओकार होते हैं। ओकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है। यथा नील उत्पलम्, नीलोत्पलम्; सूर्य उदयः, सूर्योदयः; एक ऊनविंशतिः एकोनविंशतिः; हृद ऊढ म्, हृदोढ म्।

२८। यदि आकार के परे उकार किंवा ऊकार रहे तो दोनों मिलकर ओकार होते हैं। ओकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है। यथा, महा उदयः, महोदयः; गङ्गा उदकम्, गङ्गोदकम्; गङ्गा ऊर्मिः, गङ्गोर्मिः; महा ऊर्मिः, महोर्मिः।

२९। यदि अकार के आगे ऋ रहे तो पूर्व अकार और पर ऋ दोनों के स्थान में अर होता है। और पूर्व वर्ण अ में यु[illegible] होता है और र परवर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, दे[illegible] ऋषिः, देवर्षि; हिम ऋतुः, हिमर्तुः।

— आकार के उत्तर ऋकार होने तो आकार के स्था[illegible]

में अकार होता है और ऋकार के स्थान र होता है। र परवर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, महा ऋषिः, महर्षिः ; देवता ऋषभः, देवतर्षभः ।

३१। यदि अकार के परे ए किंवा ऐकार रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है । यथा, अद्य एव, अद्यैव ; एक एकम्, एकैकम्; मत ऐक्यम्, मतैक्यम् ; तव ऐश्वर्यम्, तवैश्वर्यम् ।

३२। यदि आकार के आगे ए किंवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है । यथा, सदा एव, सदैव ; तथा एतत्, तथैतत् ; महा ऐरावतः, महैरावतः ; महा ऐश्वर्यम्, महैश्वर्यम् ।

३३। यदि अकार के परे ओ किंवा औ रहे तो दोनों मिलकर औकार होते हैं। औकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है । यथा, जल ओघः, जलौघः ; ग्राम ओकः, ग्रामौकः ; वित्त औदार्यम्, वित्तौदार्यम् ; गत औत्सुक्यः, गतौत्सुक्यः ; कण्ठ औत्कण्ठ्यम्, कण्ठौत्कण्ठ्यम् ।

३४। यदि आकार के परे ओ किंवा औ रहे तो दोनों मिलकर औकार होता है। औकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है । यथा, महा ओषधिः, महौषधिः ; सदा ओदनम्, सदौदनम् ; महा औदार्यम्, महौदार्यम् ; सदा औत्सुक्यम्, सदौत्सुक्यम् ।

३५। इ के आगे इ ई भिन्न स्वर वर्ण रहने से ह्रस्व इ के स्थान य् होता है। पूर्व वर्ण और य ये दोनों परस्पर में युक्त होते हैं। यथा, यदि अपि, यद्यपि; अति आचारः, अत्याचारः; अभि उदयः, अभ्युदयः ; प्रति ऊहः, प्रत्यूहः ; मुनि ऋषभः, मुन्यृषभः; प्रति एक, प्रत्येक ; अति ऐश्वर्यम्, अत्यैश्वर्यम् ; पचति ओदनम्, पचत्योदनम् ; अति औदार्यम्, अत्यौदार्यम् ।

३६। इ ई भिन्न स्वर वर्ण के परे रहने से दीर्घ ई य होता है। पूर्व वर्ण और य् परस्पर में युक्त होते हैं। यथा, नदी अम्बु, नद्यम्बु ; देवी आगता, देव्यागता ; सखी उक्तम्, सख्युक्तम् ; सखी ऊर्द्धगः, सख्यूर्द्धगः ; नदी ऋषभः, नद्यृषभः ; गोपी एषा, गोप्येषा ; नदी

ऐरावत., बलैरावत. , सरस्वती ओघ., सरस्वत्योघः ; वाणी औचित्यम्, वाण्यौचित्यम् ।

३७। उ के परे उ ऊ भिन्न स्वर वर्ण रहने से ह्रस्व उ के स्थान में व होता है। पूर्व वर्ण और व् परस्वर में युक्त होते हैं । यथा, अनु अय., अन्वयः ; सु आगतम्, स्वागतम् ; मधु इदम्, मध्विदम् ; साधु ईहितम्, साध्वीहितम् ; मधु ऋते, मध्वृते ; अनु एषणम्, अन्वेषणम् ; अनु एहि, अन्वेहि ; पचतु ओदनम्, पचत्वोदनम् ; ददातु औषधम्, ददात्वौषधम् ।

३८। ऊ के परे उ ऊ भिन्न स्वर वर्ण रहने से दीर्घ ऊकार के स्थान में व होता है। पूर्व वर्ण व में युक्त होकर अनन्तर परस्वर में युक्त होता है। यथा, सरयू अम्बु, सरय्वम्बु ; वधू आदि, वध्वादि; तनू इन्द्रियम्, तन्विन्द्रियम ; तनू ईश्वरः, तन्वीश्वरः ; सरयू एधितम्, सरय्वेधितम् ; वधू ऐश्वर्यम्, वध्वैश्वर्यम् ; सरयू ओघः, सरय्वोघः ; वधू औदार्यम, वध्वौदार्यम् ।

३९। ऋ के परे ऋ भिन्न स्वर वर्ण रहने से ऋ के स्थान में र होता है। पूर्व वर्ण र में युक्त होकर अनन्तर परस्वर में युत होता है । यथा, पितृ अनुमति, पित्रनुमति ; पितृ आदेशः, पित्रादेशः ; पितृ इच्छा, पित्रिच्छा ; पितृ ईहितम्, पित्रीहितम् ; पितृ उपदेशः, पित्रुपदेशः ; पितृ ऊहः, पित्रूहः ; पितृ एषणा, पित्रेषणा ; पितृ ऐश्वर्यम्, पित्रैश्वर्यम् ; पितृ ओकः, पित्रोकः ; पितृ औदार्यम पित्रौदार्यम ।

४०। ए के परे स्वर वर्ण रहने से एकार के स्थान में अय् होता है। पूर्व वर्ण अकार में युक्त होता है और यकार परस्वर में युक्त होता है। यथा, शे अनम्, शयनम् ; ने अनम्, नयनम् ; जे अति, जयति ; संचे अः, संचयः ; शे आते, शयाते ; अशे आताम्, अशयाताम् ; शे इतम, शयितम् ; अशे इष्ट, अशयिष्ट ; शे इतः, शयितः ; शे इरन्. शयिरन् ; शे ए. शये ; शे ऐ शयै ।

४१। ऐ के परे स्वर वर्ण रहने से ऐकार के स्थान में आय होता है। आकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है और यकार परस्वर में युक्त होता है। यथा. विनै अकः विनायकः ; संचै अकः, संचायकः;

रै आ, राया ; रै इ, रायि ; रै ए, राये ; रै औ, रायौ ।

४२। ओकार के परे स्वर वर्ण रहने से ओकार के स्थान में अव होता है। अकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है, और परस्वर में वकार युक्त होता है। यथा, भो अनम, भवनम् ; पो अनः, पवनः ; ओ अणम, अवणम् ; गो आ, गवा ; भो इता, भविता ; पो इत्रम्, पवित्रम्; गो ए, गवे ; गो ओः, गवोः ।

४३। औकार के परे स्वर वर्ण रहने से औकार के स्थान में आव होता है। आकार में पूर्व वर्ण युक्त होता है, और वकार परस्वर वर्ण में युक्त होता है। यथा, पौ अकः पावकः ; नौ आः, नावाः ; भौ इनी, भाविनी ; भौ उकः, भावुकः ; नौ ए, नावे ; नौ ओः नावोः ; नौ औ, नावौ ।

४४। पद के अनन्तर में एकार अथवा ओकार के आगे जो ह्रस्व अकार रहता है उसका लोप अथवा पूर्व रूप हो जाता है। पूर्व रूप होने से अकार का जो चिह्न रहता है उसको लुप्त अकार कहते हैं और रूप उसका ऽ ऐसा होता है। यथा कवे अवेहि कवेऽवेहि ; सखे अर्पय, सखेऽर्पय ; प्रभो अनुगृहाण, प्रभोऽनुगृहाण , गुरो अनुमन्यस्व, गुरोऽनुमन्यस्व ।

व्यञ्जन सन्धिः ।

४५। त और द के परे यदि च अथवा छ होवे तो त और द के स्थान में च होता है। यथा, महत चक्रम्, महच्चक्रम् , भवत चरणम्, भवच्चरणम् ; उत चारणम्, उच्चारणम् ; एतत् चन्द्रमण्डलम, एतच्चन्द्रमण्डलम ; विपद् चय विपच्चय , तद् चलनम , तच्चलनम् , महत छत्रम, महच्छत्रम; भवत् छलनं, भवच्छलनं , उत छिनत्ति, उच्छिनत्ति, तद् छवि, तच्छवि ; एतद छाया, एतच्छाया ।

४६। यदि त और द के परे ज अथवा झ होवे तो त और द के स्थान ज होता है। यथा भवत जीवनम भवज्जीवनम् ; उत ज्वलः उज्ज्वल , सरित् जलम सरिज्जलम , तत् जन्म तज्जन्म , एतद जननम्, एतज्जननम् ; विपद् जालम, विपज्जालम, महत् झंकारम्, महज्झंकारम; तद् झनत्कारः, तज्झनत्कार ।

४७। यदि दन्त्य न के उत्तर भाग में ज अथवा झ होवे तो न

के स्थान ञ् होता है । यथा, महान् जयः, महाञ्जयः ; राजन् जाग्रहि, राजञ्जाग्रहि ; भवान् जीवतु, भवाञ्जीवतु ; उद्यन् झङ्कारः, उद्यञ्झङ्कारः ; वीरमन् झनत्कारः, वीरमञ्झनत्कारः ; गच्छन् झटिति, गच्छञ्झटिति ।

४८ । यदि पद के अन्त के त अथवा द परे तालव्य श होवे तो त और द स्थान में च और श के जगह पर छ होता है । यथा, जगत् शरणम्, जगच्छरणम् ; महत् शकटम्, महच्छकटम् ; तद् शरीरम्, तच्छरीरम् ; एतद् शकाब्दीयम् एतच्छकाब्दीयम् ।

४९ । यदि पद के अन्त के नकार के परे तालव्य शकार होवे तो न् के स्थान में ञ और श के स्थान में छ होता है । यथा, महान् शब्दः, महाञ्छब्दः ; धावन् शशः, धावञ्छशः ; निन्दन् शठः, निन्दञ्छठः ।

५० । यदि पद के अन्त के त अथवा द के परे ह होवे तो त के स्थान में द और ह के स्थान में ध होता है । यथा, उत् हतः, उद्धतः ; उत् हरणम्, उद्धरणम् ; महत् हसनम्, महद्धसनम् ; तत् हितम्, तद्धितम् ; तत् हेयम्, तद्धेयम् ; विपद् हेतुः, विपद्धेतुः ।

५१ । यदि च अथवा ज के परे दन्त्य न होवे तो न के स्थान में ञ होता है । यथा, याच् ना, याच्ञा ; यज नः, यज्ञः ; यज् नाते, यज्ञाते ; जज निषि, जज्ञिषि ; जज निध्वे, जज्ञिध्वे ; जज् ने, जज्ञे ; राज ना, राज्ञा ; राज नी, राज्ञी ; ज और ञ ये दोनों वर्ण जब संयुक्त होते हैं तब ज्ञ ऐसा वर्ण लिखा जाता है और ग्य भी बोला जाता है ।

५२ । यदि त और द के परे ट और ठ होवे, तो त और द के स्थान में ट होता है । यथा, उत् टलति, उट्टलति ; महत् टङ्कनम्, महट्टङ्कनम् ; तद् टीका, तट्टीका ; एतद् टङ्कारः, एतट्टङ्कारः ; षट् ठकारः, षट्ठकारः ; एतद् ठक्कुरः, एतट्ठक्कुरः ।

५३ । यदि त और द के परे ड अथवा ढ होवे तो त और द के स्थान ड होता है । यथा , उत् डीनम्, उड्डीनम् ; भवत् डमरुः, भवड्डमरुः ; तत् डिमडिम्, तड्डिमडिम् ; एतद् डामरः, एतड्डामरः ; उत् ढौकते, उड्ढौकते ; महत् ढालम्, महड्ढालम् ; एतद् ढक्का, एतड्ढक्का ; तत् ढुण्ढनम्, तड्ढुण्ढनम् ।

५४। दन्त्य न के परे ड अथवा ढ होवे तो दन्त्य न के स्थान में मूर्द्धन्य ण होता है। यथा, महान् डामरः, महाण्डामरः ; रुवन् डिमृडिमः, रुवण्डिमडिमः ; भवान् ढुण्ढते, भवाण्ढुण्ढते ; राजन् ढौकसे, राजण्ढौकसे। के त

५५। मूर्द्धन्य ष आगे रहने से त के स्थान में ट और थ रहने से थ के स्थान में ठ होता है। यथा, आकृष तः, आकृष्टः ; स्रष ता, स्रष्टा ; द्रष् ता, द्रष्टा ; निविष् तः, निविष्टः ; प्रविष् तः, प्रविष्टः ; उत्कृष तः, उत्कृष्टः ; षष् थः, षष्ठः।

५६। (यदि लकार परे होवे तो त, द, और न, के स्थान में ल होता है। परन्तु न के स्थान में अनुनासिक लँ होता है इस पर यह ँ चिन्ह रहता है। यथा, वृहत् ललाटम्, वृहल्ललाटम् ; उत् लिखति, उल्लिखति ; तद् लीलायितम्, तल्लीलायितम् ; एतद् लीलोद्यानम्, एतल्लीलोद्यानम् ; महान् लाभः, महाँल्लाभः ; भवान् लभते, भवाँल्लभते)।

५७। (यदि ह्रस्व स्वर वर्ण से आगे ङ ण अथवा न होवे और उसके परे फिर स्वर वर्ण हो तो ये तीनों द्वित्व हो जाते हैं और परस्पर में युक्त होता है। प्रत्यङ् आत्मा, प्रत्यङ्ङात्मा ; सुगण् अच्चति, सुगण्णच्चति ; धावन् अश्वः, धावन्नश्वः ; हसन् आगतः, हसन्नागतः ; चिन्तयन् इह, चिन्तयन्निह ; सृजन् ईश्वरः, सृजन्नीश्वरः ; स्मरन् उवाच, स्मरन्नुवाच)

५८। यदि दीर्घ स्वर के परे न होवे तो उसको द्वित्व नहीं होता है। यथा, महान् आग्रहः, महानाग्रहः ; कवीन् आक्रय, कवीनाक्रय ; साधून् आद्रिय, साधनाद्रिय ; भ्रातृन् अनुगच्छस्व, भ्रातृननुगच्छस्व।

५९। यदि च अथवा छ परे होवे तो पूर्व पद के अन्तेस्थित न के स्थान में दन्त्य स होकर तालव्य श हो जाता है और जो पूर्व स्वर है उस के ऊपर अनुस्वार अनुनासिक हो जाता है अनुनासिक का चिह्न यह ँ यथा, पश्यन् चकितः, पश्यँश्चकितः ; पश्यंश्चकितः, हसन् चलितः, हसँश्चलितः, हसंश्चलितः ; नृत्यन् चकोरः, नृत्यँश्चकोरः, नृत्यंश्चकोरः ; धावन् छागः, धावँश्छागः, धावंश्छागः ; महान् छेदः,

महाँश्छेदः, महांश्छेदः ; विराजन् छायापथः, विराजँश्छायापथः, विराजंश्छायापथः ।

६० । यदि ट अथवा ठ परे होवे तो पद के अन्तेस्थित नकार के स्थान में स होता है और उस के पूर्व स के ऊपर अनुस्वार और अनुनासिक होता है और दन्त्य स के स्थान में मूर्द्धन्य ष होता है वह ष पर-व्यञ्जन में संयुक्त होता है तब ऐसा वह लिखा जाता है ष्ट ष्ठ । यथा, चलन् टिट्टिभः, चलँष्टिट्टिभः ; चलंष्टिट्टिभः ; उद्यन् टङ्कारः, उद्यँष्टङ्कारः, उद्यंष्टङ्कारः ; महान् ठक्कुरः, महाँष्ठक्कुरः, महांष्ठक्कुरः ।

६१ । यदि त अथवा थ परे होवे तो पद के अन्तेस्थित न के स्थान में स होता है और उस के पूर्व स्वर को अनुस्वार और अनुनासिक होता है और पर व्यञ्जन में युक्त होकर ऐसा कहा और लिखा जाता है । पतन् तरुः, पतँस्तरुः ; पतंस्तरुः, महान् तड़ागः, महाँस्तड़ागः, महांस्तड़ागः ; उत्तिष्ठन् तरङ्गः, उत्तिष्ठँस्तरङ्गः ; उत्तिष्ठंस्तरङ्गः ; शाम्यन् तापः, शाम्यँस्तापः, शाम्यंस्तापः ; क्षिपन् थुत्कारः, क्षिपँस्थुत्कारः ; क्षिपंस्थुत्कारः ।

६२ । यदि अन्तःस्थ अथवा ऊष्म वर्ण परे होवे तो पद के अन्त में स्थित म की जगह अनुस्वार होता है । यथा, सत्वरम् याति, सत्वरंयाति ; करुणम् रोदिति, करुणंरोदिति ; विद्याम् लभते, विद्यांलभते ; भारम् वहते, भारंवहते ; शय्यायाम् शेते, शय्यायांशेते ; कष्टम् सहते, कष्टंसहते ; मधुरम् हसति, मधुरंहसति ।

६३ । यदि स्पर्श वर्ण परे होवे तो पद के अन्तेस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है । अथवा जो वर्ग का वर्ण पर पद में होवे उस वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है ; यथा, किम् करोषि, किंकरोषि, किङ्करोषि ; गृहम् गच्छ, गृहंगच्छ, गृहङ्गच्छ, क्षिप्रम् चलति, क्षिप्रंचलति, क्षिप्रञ्चलति ; शत्रुम् जहि, शत्रुंजहि ; शत्रुञ्जहि; नदीम् तरति, नदींतरति, नदीन्तरति ; धनम् ददाति, धनंददाति, धनन्ददाति ; स्तनम् धयति , स्तनंधयति, स्तनन्धयति, गुरुम् नमति, गुरुंनमति, गुरुन्नमति ; चन्द्रम् पश्यति, चन्द्रंपश्यति ; चन्द्रम्पश्यति ; किम् फलम्, किंफलम्, किम्फलम् ; सत्यम् ब्रूयात्, सत्यंब्रूयात्,

सत्यम्ब्रूयात्; मधुरम् भाषते, मधुरंभाषते, मधरम्भाषते; शास्त्रम् मीमांसते, शास्त्रंमीमांसते, शास्त्रम्मीमांसते ।

६४। यदि छ उत्तर पद में होवे तो ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर वर्ण के परे च अधिक हो जाता है और च छ मिलकर च्छ ऐसे लिखे जाते हैं। यथा, छित छत्रम्, छितच्छत्रम्; परि छदः, परिच्छदः; अव छेदः, अवच्छेदः; वृत्त छाया, वृत्तच्छाया; गृह छिद्रम्, गृहच्छिद्रम्; परन्तु दीर्घ स्वर से परे च होता है और नहीं भी होता। यथा, लक्ष्मी छाया, लक्ष्मीच्छाया; लक्ष्मीछाया ।

६५। यदि स्वर वर्ण वा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व, अन्तर में होवे तो पद के अन्त स्थित क के स्थान में ग होता है। यथा, दिक् अन्तः, दिगन्तः; वाक् आडम्बरः, वागाडम्बरः; त्वक् इन्द्रियम्, त्वगिन्द्रियम; वाक् ईशः, वागीशः; सम्यक् उक्तम्, सम्यगुक्तम्; धिक् ऋणकारिणम्, धिगृणकारिणम; प्राक् एव, प्रागेव; धिक् ऐश्वर्य्यम धिगैश्वर्य्यम्; सम्यक् ओजः, सम्यगोजः; वाक् औचित्यम्, वागौचित्यम्; दिक् गजः, दिग्गजः; प्राक् घनोदयः, प्राग्घनोदयः; वाक् जालम्, वाग्जालम्; सम्यक् ढौकते, सम्यग्ढौकते; सम्यक् झंकारः, सम्यग्झङ्कारः; सम्यक् डयते, सम्यग्डयते; वाक् दानम्, वाग्दानम्; धिक् धनगर्वितम, धिग्धनगर्वितम्; वाक् बाहुल्यम्, वाग्बाहुल्यम; दिक् भागः, दिग्भागः; धिक् याचकम्, धिग्याचकम; वाक् रोधः, वाग्रोधः; धिक् लोभिनम्, धिग्लोभिनम्; सम्यक् वदति, सम्यग्वदति ।

६६। यदि स्वर वर्ण अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व परे होवे तो अन्त स्थित त के स्थान में द होता है। यथा, जगत् अन्तः, जगदन्तः, जगत् आदिः, जगदादिः; जगत् इन्द्रः, जगदिन्द्रः; जगत् ईशः, जगदीशः; भवत् उक्तम् भवदुक्तम्; भवत् ऊहनम्, भवदूहनम तत् ऋणम तदृणम्; जगत् एतत्, जगदेतत् महत् ऐश्वर्य्यम्, महदैश्वर्य्यम्; महत् ओजः, महदोजः; महत् औषधम्, महदौषधम; बृहत् गहनम्, बृहद्गहनम; बृहत् घटः, बृहद्घटः; भवत् दर्पनम् भवद्दर्पनम्; महत् धनुः, महद्धनुः; महत् बन्धुः, महद्बन्धुः; महत् भयम्, महद्भयम्; बृहत् यानम्, बृहद्यानम; बृहत् रथः,

बृहद्रथः ; महत् वनम्, महद्वनम् ।

६७ । यदि न अथवा म पर पद में होवे तो पूर्व पद के अन्तस्थित क के स्थान में ङ और त द के स्थान में न होता है । यथा, दिक् नागः, दिङ्नागः ; जगत् नाथः, जगन्नाथः ; तद् नीरम्, तन्नीरम ; प्राक् मुखः, प्राङ्मुखः ; भवत् मतम्, भवन्मतम् ; एतद् मानसम्, एतन्मानसम् ।

६८ । यदि च वा छ परे होवे तो विसर्ग के स्थान में तालव्य श होता है यथा, पूर्णः चन्द्रः, पूर्णश्चन्द्रः ; ज्योतिः चक्रम, ज्योतिश्चक्रम ; निः चितः, निश्चितः ; वायुः चलति, वायुश्चलति ; धावितः छागः, धावितश्छागः ; रवेः छविः, रवेश्छविः ; तरोः छाया, तरोश्छाया ; रज्जुः छिद्यते, रज्जुश्छिद्यते ।

६९ । यदि ट अथवा ठ पर भाग में होवे तो विसर्ग के स्थान में मूर्द्धन्य ष होता है । यथा, भीतः टलति, भीतष्टलति ; उड्डीनः टिट्टिभः, उड्डीनष्टिट्टिभः ; धनुः टङ्कारः, धनुष्टङ्कारः ; स्थिरः ठक्कुरः, स्थिरष्ठक्कुरः ; भग्नः ठक्कुरः, भग्नष्ठक्कुरः ।

७० । यदि त अथवा थ पर भाग में होवे तो विसर्ग के स्थान में दन्त्य स होता है । यथा, उन्नतः तरुः, उन्नतस्तरुः ; नद्याः तीरम्, नद्यास्तीरम् ; भूमेः तलम्, भूमेस्तलम् ; क्षिप्रः थुत्कारः, क्षिप्रस्थुत्कारः ।

७१ । यदि ह्रस्व अकार के आगे विसर्ग और उस के परे ह्रस्व अकार होवे तो पूर्व अकार और विसर्ग के स्थान में ओकार होता है । और उन में पूर्व वर्ण युक्त होता है और पर का अकार पूर्व रूप होकर इस रूप से ऽ लिखा जाता है । यथा, नरः अयम, नरोऽयम ; नवः अङ्कुरः, नवोऽङ्कुरः ; तीक्ष्णः अङ्कुशः, तीक्ष्णोऽङ्कुशः ; ज्वलितः अङ्गारः, ज्वलितोऽङ्गारः ; वेदः अधीतः, वेदोऽधीतः ।

७२ । यदि वर्ग का तृतीय चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह पर पद में होवे तो ह्रस्व अकार और विसर्ग के स्थान में ओकार हो जाता है । ओकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है । यथा, शोभनः गन्धः, शोभनोगन्धः ; नूतनः घटः, नूतनोघटः ; सद्यः जातः, सद्योजातः ; मधुरः झङ्कारः, मधुरोझङ्कारः ; नवः डमरुः, नवोडमरुः ;

गजः ढौकते, गजोढौकते ; मूर्द्धन्यः नकारः, मूर्द्धन्योनकारः ; निर्वाणः दीपः, निर्वाणोदीपः ; अश्वः धावति, अश्वोधावति ; उन्नतः नगः, उन्नतोनगः ; दृढ़ः बन्धः, दृढ़ोबन्धः अकुतः भयः, अकुतोभयः ; अतीतः मासः, अतीतोमासः ; कृतः यत्नः, कृतोयत्नः ; भ्रान्तः रोषः, भ्रान्तोरोषः ; कृतः लोभः, कृतोलोभः ; शीतः वायुः, शीतोवायुः ; वामः हस्तः, वामोहस्तः ।

७३ । यदि अकार को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर वर्ण पर पद में होवे तो अकार के आगे जो विसर्ग होता है उसका लोप हो जाता है लोप होने पर सन्धि नहीं होती है । यथा, कुतः आगतः, कुतआगतः ; नरः इव, नरइव ; कः ईहते, कईहते ; चन्द्रः उदेति, चन्द्रउदेति ; इतः ऊर्द्धम, इतऊर्द्धम् ; देवः ऋषिः, देवऋषि ; उच्चारितः लृकारः, उच्चारितलृकार ; कः एषः, कएषः ; कुतः ऐक्यम्, कुतऐक्यम् ; रक्तः ओष्टः, रक्तओष्टः ; राज्ञः औदार्य्यम, राज्ञऔदार्य्यम ।

७४ । यदि स्वर अथवा वर्ग का तृतीय चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, उत्तर में होवे तो आकार के अग्र भाग में जो विसर्ग हो उसका लोप हो जाता है लोप होने पर सन्धि नहीं होती है । यथा, अश्वाः अमी, अश्वाअमी ; गजाः इमे, गजाइमे ; ताराः उदिताः, ताराउदिताः ; ऋषयः आगताः, ऋषयआगताः ; नराः एते, नराएते ; हताः गजाः, हतागजाः ; क्रीताः घटाः, क्रीताघटाः ; पुत्राः जाताः, पुत्राजाताः ; मधुराः झङ्काराः, मधुराझङ्काराः ; नवाः डमरवः, नवाडमरवः ; गजाः ढौकन्ते, गजाढौकन्ते ; निर्वाणाः दीपाः, निर्वाणादीपाः ; अश्वाः धावन्ति, अश्वाधावन्ति ; उन्नताः नगाः, उन्नतानगाः ; दृढ़ाः बन्धाः ; दृढ़ाबन्धाः ; नराः भीताः, नराभीताः ; अतीताः मासाः, अतीतामासाः ; छात्राः यतन्ते, छात्रा यतन्ते ; एताः रथ्याः, एतारथ्याः ; नराः लभन्ते, नरालभन्ते ; वाताः वान्ति, वातावान्ति ; बालकाः हसन्ति, बालकाहसन्ति ; बालकाः लपन्ति, बालकालपन्ति ।

७५ । यदि स्वर वर्ण वा वर्ग के तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, पर भाग में होवे तो अ आ भिन्न स्वर वर्ण के आगे जो विसर्ग हो उस के स्थान में र हो जाता है । यथा, कविः

अयम्, कविरयम् ; गतिः इयम्, गतिरियम् ; रविः उदेति, रविरुदेति ; औः असौ, औरसौ ; सुधीः एषः, सुधीरेषः ; बन्धुः आगतः, बन्धुरागतः ; गुरुः उवाच, गुरुरुवाच ; वधूः एषा, वधूरेषा ; भूः इयम, भूरियम ; मातृः अर्च्चय, मातृरर्च्चय ; दुहितृः आकृय, दुहितृराकृय ; रवेः उदयः, रवेरुदयः ; तैः उक्तम, तैरुक्तम् ; विधोः अस्तगमनम्, विधोरस्तगमनम् ; प्रभोः आदेशः, प्रभोरादेशः ; गौः अयम्, गौरयम् ; ऋषिः गच्छति, ऋषिर्गच्छति ; कविः घ्राणम, कविर्घ्राणम् ; गुरुः जयति, गुरुर्जयति ; क्रतैः भङ्कारैः, क्रतैर्भङ्कारैः ; नवैः डमरुभिः, नवैर्डमरुभिः ; गौः ढौकते, गौर्ढौकते ; रवेः दर्शनम् रवेर्दर्शनम् ; निः धनम्, निर्धनम् ; दुः नीतिः, दुर्नीतिः ; निः बन्धः, निर्बन्धः ; विधुः लोयते, विधुर्लोयते ; वायुः वाति, वायुर्वाति ; शिशुः हसति:, शिशुर्हसति ।

७६। यदि स्वर वा वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, पर पद में होवे तो अकार के आगे र के स्थान में जो विसर्ग होता है उस विसर्ग के स्थान में र होता है । यथा, पुनः अपि, पुनरपि ; पुनः आगतः, पुनरागतः ; प्रातः इहागतः, प्रातरिहागतः ; प्रातः एव, प्रातरेव ; अन्तः धानम्, अन्तर्धानम् ; स्वः गतः, स्वर्गतः ; भ्रातः आगच्छ, भ्रातरागच्छ ; पितः अनुमन्यस्व, पितरनुमन्यस्व ; मातः देहि, मातर्देहि ; यामातः वद, यामातर्वद ; दुहितः याहि, दुहितर्याहि ।

७७। पर भाग में र होने से विसर्ग के स्थान में जो र होता है उस का लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ होता है। यथा, पितः रक्ष, पितारक्ष ; निः रसः, नीरसः ; निः रोगः, नीरोगः ; विधुः राजते, विधूराजते ; मातुः रोदनम्, मातूरोदनम् ।

७८। यदि अकार को छोड़ कर कोई स्वर अथवा व्यञ्जन वर्ण पर पद में होवे तो सः और एषः दोनों पद का विसर्ग लोप हो जाता है लोप होने पर सन्धि नहीं होती है । यथा, सः आगतः, स आगतः ; सः इच्छति, स इच्छति ; सः ईहते, स ईहते ; सः उवाच, स उवाच ; सः करोति, स करोति ; सः गच्छति, स गच्छति ; सः चलति,

सचलति ; सः हसति, सहसति ; एषः आयाति, एषआयाति ; एषः एति, एषएति ; एषः धावति, एषधावति ; एषः रोदिति, एष-रोदिति ; एषः वदति, एषवदति ; एषः शेते, एषशेते ; एषः हसति, एषहसति ; यदि श्लोक अथवा ऋचा का पाद नाम श्लोक का चौथा हिस्सा उस को पूर्ण करना होय तो सः इसके आगे कोई स्वर वर्ण पर पद में होय तो सः इस पद के अन्त में स्थित जो विसर्ग उस का लोप हो जाता है और सन्धि भी होती है। यथा, सः एष दाशरथी रामः, सैषदाशरथी रामः। सः एष राजा युधिष्ठिरः, सैषराजा युधिष्ठिरः। इत्यादि।

७९। यदि स्वर वा वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, पर पद में होवे तो भोः पद के विसर्ग का लोप होता है। लोप होने पर सन्धि नहीं होती है और इन्हीं के विसर्ग को परस्वर य् भी होता है वह य् अगिले स्वर में युक्त होता है। यथा, भोः अम्बरीष, भोअम्बरीष ; भोः ईशान, भोईशान ; भोः उमापते, भोउमापते ; भोः गदाधर, भोगदाधर ; भोः जनमेजय, भोजनमेजय ; भोः दामोदर, भोदामोदर ; भोः माधव, भोमाधव ; भोः यदुपते, भोयदुपते ; भोयम्बरीष, भोयीशान, भोयुमापते।

णत्व विधान।

८०। यदि ऋ, ॠ, र, और मूर्द्धन्य ष, ये चारि वर्ण के आगे न होवे तो वह मूर्द्धन्य ण हो जाता है। यथा, नृणाम्, तिसृणाम्, चतसृणाम्, नॄणाम, भ्रातृणाम्, दातृणाम्, चतुर्णाम् दोषाणा पूर्णो।

८१। यदि स्वर वर्ण वा कवर्ग पवर्ग य व ह और अनुस्वार व्यवधान होवे तो भी न के स्थान ण हो जाता है। यथा, करणम्, कराणाम्, करिणा, गुरुणा, परेण, अर्केण, मूर्खेण, मृगेण दीर्घेण, दर्पेण, रेफेण, द्रुमेण, रयेण, गर्व्वेण, ग्रहेण, बृंहणम्।

८२। इन वर्णों को छोड़ कर दूसरे वर्णों के व्यवधान रहने से दन्त्य न मूर्द्धन्य ण नहीं होता है। यथा, अर्चना, मूर्च्छना, अर्जनम् किरीटेन, पृष्ठेन, मृडेन, दृढेन, वर्णानाम्, आर्त्तेन, अर्थेन, विमर्देन, अर्द्धेन, विरलेन, स्पर्शेन, रसेन।

८३। पद के अन्त में जो दन्त्य न होवे तो वह मूर्द्धन्य ण नहीं

होता है । यथा; नरान् हरीन्, गुरून्, भ्रातॄन् ।

षत्व विधान ।

८४ । अ आ भिन्न स्वर और क र ल के परे प्रत्यय का जो दन्त्य सकार होता है उसके स्थान में मूर्द्धन्य षकार होता है । यथा, मुनिषु, गुणिषु, नदीषु, सुधीषु, साधुषु, गुरुषु, प्रतिभूषु, वधूषु, भ्रातृषु, स्वसृषु, सर्व्वेषाम्, अन्येषाम्, गोषु, द्योषु, ग्लौषु, नौषु, वाक्षु, दिक्षु, चतुर्षु, गीर्षु, कमलषु ।

८५ । अनुस्वार और विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान मूर्द्धन्य ष होता है । यथा, हवींषि, धनूंषि, आशीःषु, धनुःषु ।

सुबन्त प्रकरण ।

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी ये सात विभक्ति शब्द के उत्तर रहती हैं । विभक्ति युक्त होने से शब्द को सुबन्त वा पद कहते हैं ।

एक एक विभक्ति के तीन तीन वचन होते हैं । एक वचन, द्वि वचन, बहु वचन । शब्द में एक वचन की विभक्ति योग होने से एक वस्तु, द्वि वचन की विभक्ति योग होने से दो वस्तु, और बहु वचन की विभक्ति योग होने से अनेक वस्तु समझे जाते हैं ।

विभक्ति की आकृति ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	:	औ	अः
द्वितीया	अम्	औ	अः
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	अः	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	अः	ओः	आम्
सप्तमी	इ	ओः	सु

शब्दों में विभक्ति के योग होने से जैसा रूप होता है वह क्रम से लिखे जाते हैं, सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है ; परन्तु एक वचन में कुछ भिन्नता है ; इस लिये एक वचन का रूप पृथक्

लिखा जायगा। जहां पृथक् न लिखा जावे वहां समझना चाहिये कि कुछ भेद नहीं है और प्रायः जहां सम्बोधन विभक्ति का रूप होता है तहां है, भोः, हे, इन्हीं का पूर्व प्रयोग होता है क्योंकि ये सम्बोधन के द्योतक नाम जनाने वाले हैं।

अकारान्त राम शब्द।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात् रामाद्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम भो राम, है राम	हे रामौ	हे रामाः

प्रायः समस्त अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द राम शब्द के सदृश होते हैं। इसी प्रकार सब शब्दों में जानना।

आकारान्त शब्द दो प्रकार के हैं एक धातु से बनाया जाता है और दूसरे आपही सिद्ध है; दोनों के रूप यह हैं।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः

धातु से जो आकारान्त शब्द तिन्हों का रूप विश्वपा शब्द के तुल्य जानना।

दूसरे आकारान्त शब्द का रूप ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वितीया	हाहाम्	हाहौ	हाहाः
तृतीया	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
चतुर्थी	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
षष्ठी	हाहाः	हाहौः	हाहाम्
सप्तमी	हाहे	हाहौः	हाहासु
सम्बोधन	हे हाहाः	हे हाहौ	हे हाहाः

इकारान्त मुनि शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति और सखि शब्द भिन्न समस्त इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द मुनि शब्द के सदृश ।

पति शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते		

सखि शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखि		

ईकारान्त सुधी शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः		

प्रायः अनेक पुंलिङ्ग दीर्घ ईकारान्त शब्द सुधी शब्द के सदृश हैं ।

उकारान्त साधु शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

प्रायः समस्त उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द साधु शब्द के सदृश होते हैं ।

ऊकारान्त हूहू शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	हूहूः	हूह्वौ	हूह्वः
द्वितीया	हूहूम्	हूह्वौ	हूहून्
तृतीया	हूह्वा	हूहूभ्याम्	हूहूभिः
चतुर्थी	हूह्वे	हूहूभ्याम्	हूहूभ्यः
पञ्चमी	हूह्वः	हूहूभ्याम्	हूहूभ्यः
षष्ठी	हूह्वः	हूह्वोः	हूह्वाम्
सप्तमी	हूह्वि	हूह्वोः	हूहूषु
सम्बोधन	हूहूः		

प्रायः समस्त ऊकारान्त पुंलिङ्ग शब्द हूहू शब्द के तुल्य होते हैं ।

ऋकारान्त दातृ शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दातः		

भ्रातृ पितृ जामातृ देवृ नृ आदि सेवाय समस्त ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द प्रायः दातृ शब्द के सदृश होते हैं ।

भ्रातृ शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	

इसके सिवाय और सकल विभक्ति दातृ शब्द के सदृश होती हैं। पितृ जामातृ देवृ नृ आदि कईएक शब्द भ्रातृ शब्द के सदृश, केवल नृ शब्द को षष्ठी का बहु बचन नॄणाम्, नृणाम् दो रूप होते हैं।

दीर्घ ऋकारान्त पुंलिङ्ग कॄ शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	कॄः	क्रौ	क्रः
द्वितीया	क्रम्	क्रौ	कॄन्
तृतीया	क्रा	कॄभ्याम्	कॄभिः
चतुर्थी	क्रे	कॄभ्याम्	कॄभ्यः
पञ्चमी	क्रः	कॄभ्याम्	कॄभ्यः
षष्ठी	क्रः	क्रोः	क्राम्
सप्तमी	क्रि	क्रोः	कॄषु

प्रायः समस्त और ऋकारान्त तॄ शब्द आदि के रूप ऐसे होते हैं और ऌ आकारान्त शब्दों के रूप इसी के सदृश होते हैं।

एकारान्त पुंलिङ्ग से शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	सेः	सयौ	सयः
द्वितीया	सयम्	सयौ	सयः
तृतीया	सया	सेभ्याम्	सेभिः
चतुर्थी	सये	सेभ्याम्	सेभ्यः
पञ्चमी	सयः	सेभ्याम्	सेभ्यः
षष्ठी	सयः	सयोः	सयाम्
सप्तमी	सयि	सयोः	सेषु
सम्बोधन	सेः		

ऐकारान्त पुंलिङ्ग रै शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	राः	रायौ	रायः
द्वितीया	रायम्	रायौ	रायः
तृतीया	राया	राभ्याम्	राभिः
चतुर्थी	रायै	राभ्याम्	राभ्यः
पञ्चमी	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
षष्ठी	रायः	रायोः	रायाम्
सप्तमी	रायि	रायोः	रासु

ओकारान्त गो शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु

ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्द सकल इसी प्रकार होते हैं ।

औकारान्त पुंलिङ्ग ग्लौ शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
चतुर्थी	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पञ्चमी	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
षष्ठी	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
सप्तमी	ग्लावि	ग्लावोः	ग्लौषु
सम्बोधन	ग्लौः		

और औकारान्त [illegible] ।

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

प्रायः समस्त आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

इकारान्त मति शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते		

समुदाय इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार होते हैं ।

ईकारान्त नदी शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम	नदीभ्यः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदिषु
सम्बोधन	नदि		

श्री शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के मध्य में कुछ नदी शब्द के सदृश और कुछ श्री शब्द के सदृश हैं केवल स्त्री शब्द का कुछ विशेष है ।

स्त्री शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

उकारान्त धेनु शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
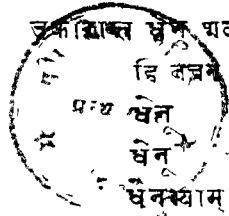
	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम् धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

सकल ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

ऊकारान्त वधू शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु		

भ्रू शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के मध्य में कुछ वधू शब्द के सदृश और कुछ भ्रू शब्द के सदृश हैं ।

ऋकारान्त दुहितृ शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
द्वितीया	दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः
तृतीया	दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
चतुर्थी	दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
पञ्चमी	दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
षष्ठी	दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
सप्तमी	दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु
सम्बोधन	दुहितः		

स्वसृ शब्द के सिवाय समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के हैं ।

स्वसृ शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

इनके सिवाय समस्त रूप दुहितृ शब्द के सदृश होते हैं ।

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्यो शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	द्यौः	द्यावौ	द्यावः
द्वितीया	द्याम्	द्यावौ	द्याः
तृतीया	द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभिः
चतुर्थी	द्यवे	द्योभ्याम्	द्योभ्यः
पञ्चमी	द्योः	द्योभ्याम्	द्योभ्यः
षष्ठी	द्योः	द्यवोः	द्यवाम्
सप्तमी	द्यवि	द्यवोः	द्योषु
सम्बोधन	द्यौः		

और ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द द्यो शब्द के सदृश हैं ।

औकारान्त नौ शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	नावः
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावोः	नौषु
सम्बोधन	नौः		

और औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप नौ शब्द के सदृश होते हैं ।

स्वरान्त नपुंसकलिङ्ग ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग फल शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
सम्बोधन	फल		

और विभक्ति का रूप पुंलिङ्ग अकारान्त शब्द के सदृश होते हैं समस्त अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

इकारान्त वारि शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि		

दधि आदि कई एक शब्द भिन्न समस्त ह्रस्व इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

दधि शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दधनि दध्नि	दध्नोः	दधिषु

अक्षि, अस्थि, और सक्थि शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

उकारान्त मधु शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	मधो, मधु		

बहुधा ह्रस्व उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

व्यञ्जनान्त शब्द—पुंलिङ्ग ।

हकारान्त पुंलिङ्ग अनडुह शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वितीया	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
तृतीया	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
चतुर्थी	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
पञ्चमी	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
षष्ठी	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
सप्तमी	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु
सम्बोधन	अनड्वन्		

वकारान्त पुंलिङ्ग ब्रह्मव् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	ब्रह्मव्	ब्रह्मवौ	ब्रह्मव
द्वितीया	ब्रह्मवम्	ब्रह्मवौ	ब्रह्मवः
तृतीया	ब्रह्मवा	ब्रह्मवभ्याम	ब्रह्मवभिः
चतुर्थी	ब्रह्मवे	ब्रह्मवभ्याम	ब्रह्मवभ्यः
पञ्चमी	ब्रह्मवः	ब्रह्मवभ्याम्	ब्रह्मवभ्यः
षष्ठी	ब्रह्मवः	ब्रह्मवोः	ब्रह्मवाम्
सप्तमी	ब्रह्मवि	ब्रह्मवोः	ब्रह्मवसु
सम्बोधन	ब्रह्मव्		

रेफान्त चतुर शब्द बहु वचनान्त ।

	बहु वचन		बहु वचन
प्रथमा	चत्वारः	द्वितीया	चतुरः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्थी	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	षष्ठी	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु		

जकारान्त सम्राज शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सम्राट्, सम्राड्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राडभ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राटसु

प्रायः समस्त जकारान्त शब्द सम्राज् शब्द के सदृश होते हैं ।

तकारान्त भूभृत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु

श्रीमत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वितीया	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृतीया	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
चतुर्थी	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
पञ्चमी	श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
षष्ठी	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
सप्तमी	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सम्बोधन	श्रीमन्		

गायत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	गायन्	गायन्तौ	गायन्तः
द्वितीया	गायन्तम्	गायन्तौ	गायतः
तृतीया	गायता	गायद्भ्याम्	गायद्भिः
चतुर्थी	गायते	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
पञ्चमी	गायतः	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
षष्ठी	गायतः	गायतोः	गायताम्
सप्तमी	गायति	गायतोः	गायत्सु

मकारान्त पुंलिङ्ग प्रशाम् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	प्रशान्	प्रशामौ	प्रशामः
द्वितीया	प्रशामम्	प्रशामौ	प्रशामः
तृतीया	प्रशामा	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भिः
चतुर्थी	प्रशामे	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भ्यः
पञ्चमी	प्रशामः	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भ्यः
षष्ठी	प्रशामः	प्रशामोः	प्रशामाम्
सप्तमी	प्रशामि	प्रशामोः	प्रशान्सु

और भी मकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप प्रशाम् शब्द के सदृश होते हैं ।

धकारान्त पुंलिङ्ग बुध् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	भुत् भुद्	बुधौ	बुधः
द्वितीया	बुधम्	बुधौ	बुधः
तृतीया	बुधा	भुद्भ्याम्	भुद्भिः
चतुर्थी	बुधे	भुद्भ्याम्	भुद्भ्यः
पञ्चमी	बुधः	भुद्भ्याम्	भुद्भ्यः
षष्ठी	बुधः	बुधोः	बुधाम्
सप्तमी	बुधि	बुधोः	भुत्सु

प्रायः समस्त धकारान्त पुंलिङ्ग शब्द बुध् के सदृश होते हैं ।

थकारान्त पुंलिङ्ग अग्निमथ् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अग्निमत् अग्निमद्	अग्निमथौ	अग्निमथः
द्वितीया	अग्निमथम्	अग्निमथौ	अग्निमथः
तृतीया	अग्निमथा	अग्निमद्भ्याम्	अग्निमद्भिः
चतुर्थी	अग्निमथे	अग्निमद्भ्याम्	अग्निमद्भ्यः
पञ्चमी	अग्निमथः	अग्निमद्भ्याम्	अग्निमद्भ्यः
षष्ठी	अग्निमथः	अग्निमथोः	अग्निमथाम्
सप्तमी	अग्निमथि	अग्निमथोः	अग्निमत्सु

प्रायः समस्त चकारान्त पुंलिङ्ग शब्द अग्निमथ शब्द के सदृश होते हैं। चकारान्त पुंलिङ्ग प्राच् शब्द, तिसका दो अर्थ, गति और पूजा तिस में गति अर्थ से जो प्राच् शब्द तिसके रूप ये हैं।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
द्वितीया	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राचः
तृतीया	प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
चतुर्थी	प्राचे	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
पञ्चमी	प्राचः	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
षष्ठी	प्राचः	प्राचोः	प्राचाम्
सप्तमी	प्राचि	प्राचोः	प्राक्षु

और पूजा अर्थ में प्रथमा और द्वितीया के द्वि वचन तक इसी प्रकार के, बहु वचन से और प्रकार के होते हैं।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
द्वितीया			प्रांचः
तृतीया	प्रांचा	प्राङ्भ्याम्	प्राङ्भिः
चतुर्थी	प्रांचे	प्राङ्भ्याम्	प्राङ्भ्यः
पञ्चमी	प्रांचः	प्राङ्भ्याम्	प्राङ्भ्यः
षष्ठी	प्रांचः	प्रांचोः	प्रांचाम्
सप्तमी	प्रांचि	प्रांचोः	प्राङ्क्षु, प्राङ्ख्षु, प्राङ्षु

और अवाच् आवाच् पराच् अन्वाच् आदि जिसके पूर्व पद के अन्त में अकार हो उत्तर अच् हो तिसका रूप प्राच् शब्द गति अर्थ पूजार्थ के सदृश होते हैं और यदि पूर्व में व्यञ्जनान्त पद हो और उत्तर में अच् शब्द हो जैसा उद् अच उदच्, प्रति अच् प्रत्यच्, दधि अच दध्यच्, वारि अच् वार्य्यच, इन्हीं को गति और पूजा अर्थ में जुदे २ रूप होते हैं परन्तु पांच वचन एक से होते हैं।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	उदङ्	उदञ्चौ	उदञ्चः
द्वितीया	उदञ्चम्	उदञ्चौ	उदीचः
तृतीया	उदीचा	उदग्भ्याम	उदग्भिः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
चतुर्थी	उदीचे	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
पञ्चमी	उदीचः	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
षष्ठी	उदीचः	उदीचोः	उदीचाम्
सप्तमी	उदीचि	उदीचोः	उदक्षु

पूजा अर्थ में पांच वचन में पहिले से ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
द्वितीया			उदञ्चः
तृतीया	उदंचा	उदङ्भ्याम्	उदङ्भिः
चतुर्थी	उदंचे	उदङ्भ्याम्	उदङ्भ्यः
पञ्चमी	उदंचः	उदङ्भ्याम्	उदङ्भ्यः
षष्ठी	उदंचः	उदंचोः	उदंचाम्
सप्तमी	उदंचि	उदंचोः	उदङ्क्षु, उदङ्षु, उदङ्षु

तकारान्त शब्द के मध्य में कुछ भूभृत् शब्द के सदृश कुछ श्रीमत् शब्द के सदृश और कुछ गायत् शब्द के सदृश हैं । भवत् शब्द गायत् शब्द के सदृश होता है ; परन्तु जब तुम अर्थ में प्रयोग होता है तो श्रीमत् शब्द के सदृश होता है, महत् शब्द गायत् शब्द के सदृश केवल प्रथमा और द्वितीया में विशेष रूप होते हैं ।

महत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	
सम्बोधन	महन्		

नकारान्त लघिमन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	लघिमन्		

यज्वन्, युवन्, आदि कई एक शब्द के सिवाय समस्त नकारान्त शब्द लघिमन् शब्द के सदृश होते हैं।

यज्वन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	यज्वा	यज्वानौ	यज्वानः
द्वितीया	यज्वानम्	यज्वानौ	यज्वनः
तृतीया	यज्वना	यज्वभ्याम्	यज्वभिः
चतुर्थी	यज्वने	यज्वभ्याम्	यज्वभ्यः
पञ्चमी	यज्वनः	यज्वभ्याम्	यज्वभ्यः
षष्ठी	यज्वनः	यज्वनोः	यज्वनाम्
सप्तमी	यज्वनि	यज्वनोः	यज्वसु, यज्वनासु
सम्बोधन	यज्वन्		

जितने नकारान्त शब्द के नकार के पूर्व में म और व संयुक्त वर्ण रहे तो प्रायः यज्वन् शब्द के सदृश होते हैं।

युवन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	युवन्		

राजन् शब्द।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	राजन्		

गुणिन् शब्द।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	गुणिन्		

पथिन् आदि कई एक भिन्न समस्त इन् प्रत्ययान्त शब्द गुणिन् शब्द के सदृश होते हैं।

पथिन् शब्द।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु

सकारान्त वेधस् शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
तृतीया	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
चतुर्थी	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
पञ्चमी	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
षष्ठी	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
सप्तमी	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु
सम्बोधन	वेधः		

विद्वस, लघीयस् पुमस्, आदि कई एक शब्द भिन्न समस्त द्रन्य सकारान्त शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

विद्वस् शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्		

समस्त वस् प्रत्ययान्त शब्द विद्वस शब्द के सदृश होते हैं ।

लघीयस् शब्द ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयःसु
सम्बोधन	लघीयन्		

समस्त ईयस् प्रत्ययान्त शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

पुमस शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	पुमन्		

स्त्रीलिङ्ग ।

चकारान्त वाच् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वागभिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वागभ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वागभ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु

यद्यपि दूसरे शब्द के साथ योग करने से वाच शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाता है तथापि उसका रूप इस प्रकारही से होता है ।

जकारान्त स्रज् शब्द माला वाचक।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	स्रक, स्रग्	स्रजौ	स्रजः
द्वितीया	स्रजम्	स्रजौ	स्रजः
तृतीया	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रगभिः
चतुर्थी	स्रजे	स्रगभ्याम्	स्रग्भ्यः
पञ्चमी	स्रजः	स्रगभ्याम्	स्रगभ्यः
षष्ठी	स्रजः	स्रजोः	स्रजाम्
सप्तमी	स्रजि	स्रजोः	स्रच,

यद्यपि दूसरे शब्द के साथ योग करने से स्रज शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाता है तथापि स्रज् शब्द इसी प्रकारही मे होता है ।

लिप् शब्द षकारान्त दीप्ति वाचक ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्र -मा	लिट, लिड्	लिषौ	लिषः
द्वितीया	लिषम्	लिषौ	लिषः
तृतीया	लिषा	लिड्भ्याम	लिडभिः
चतुर्थी	लिषे	लिड्भ्याम्	लिड्भ्यः
पञ्चमी	लिषः	लिड्भ्याम्	लिडभ्यः
षष्ठी	लिषः	लिषोः	लिषाम्
सप्तमी	लिषि	लिषोः	लिट्सु, लिट्त्सु

रेफान्त गिर् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु

इसी प्रकार पुर आदि रेफान्त शब्दों के भी रूप होते हैं ।

दकारान्त आपद् शब्द दुःख वाचक ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	आपत्, आपद्	आपदौ	आपदः
द्वितीया	आपदम्	आपदौ	आपदः
तृतीया	आपदा	आपद्भ्याम्	आपद्भिः
चतुर्थी	आपदे	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः
पञ्चमी	आपदः	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः
षष्ठी	आपदः	आपदोः	आपदाम्
सप्तमी	आपदि	आपदोः	आपत्सु

दूसरे २ शब्द के साथ योग करने से आपद् शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाता है ; तब भी इसी प्रकार का रूप रहता है ; समस्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दकारान्त शब्द आपद् शब्द के सदृश होते हैं ।

पकारान्त अप् शब्द जल वाचक ।

अप् शब्द केवल बहु वचन में प्रयोग होता है ।

	बहु वचन		बहु वचन
प्रथमा	आपः	द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः	चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः	षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु		

शकारान्त दिश् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु

नपुंसक लिङ्ग ।

तकारान्त श्रीमत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
द्वितीया	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति

और विभक्ति में पुंलिङ्ग के सदृश होता है; प्रायः समस्त तकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द श्रीमत् शब्द के सदृश होते हैं ।

महत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति

और विभक्ति पुंलिङ्ग शब्द के सदृश होता है ।

जगत् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	जगत्, जगद्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति

और विभक्ति में महत् शब्द के तुल्य होता है ।

नकारान्त धामन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	धाम	धामनी, धाम्नी	धामानि
द्वितीया	धाम	धामनी, धाम्नी	धामानि

और विभक्ति में पुंलिङ्ग लघिमन् शब्द के सदृश होता है; प्रायः समुदाय नकारान्त शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

कर्म्मन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि

और सब विभक्ति में पुंलिङ्ग यज्वन् शब्द के सदृश होते हैं; और चर्म्मन् शब्द का रूप इसी प्रकार का होता है ।

चर्म्मन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	चर्म्म	चर्म्मणी	चर्म्माणि
द्वितीया	चर्म्म	चर्म्मणी	चर्म्माणि

और सब विभक्ति में कर्म्मन् शब्द के तुल्य होते हैं ।

अहन् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि
द्वितीया	अहः	अहनी, अह्नी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु

सकारान्त पयस् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि

और सब विभक्ति में वेधस शब्द के सदृश होता है. मनस् चेतस् आदि बहुधा सकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

हविस् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु

सर्पिस आदि बहुधा इस् प्रत्ययान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द इसी

प्रकार होते हैं ।

धनुस् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु

चक्षुष् और दूसरे उस् प्रत्ययान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं ।

सर्वनाम ।

सर्व शब्द पुंलिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्माद्, सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	सर्व		

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

और समस्त विभक्ति में पुंलिङ्ग के सदृश होता है ।

स्त्रीलिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	सर्वे		

अन्य शब्द सर्व शब्द के सदृश है ; केवल नपुंसक लिङ्ग के प्रथमा और द्वितीया के एक बचन में अन्यत यह पद होता है ।

पूर्व शब्द पुंलिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्
तृतीया	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
चतुर्थी	पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्वस्मात, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
सप्तमी	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
सम्बोधन	पूर्व		

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
सम्बोधन	पूर्व		

और विभक्ति में पुंलिङ्ग के सदृश होता है ; स्त्री लिङ्ग में सर्व शब्द के सदृश होता है ; कुछ भेद नहीं । पर, अपर, दक्षिण, आदि कई एक शब्द पूर्व शब्द के सदृश होते हैं ।

अस्मद् शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यं, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

यह शब्द तीनों लिङ्ग में समान है कुछ भेद नहीं ।

युष्मद्, शब्द ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यह शब्द भी तीनों लिङ्ग में समान है कुछ भेद नहीं ।

इदम् शब्द, पुंलिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

और सब विभक्ति में पुंलिङ्ग के समान रूप होता है ।

स्त्री लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

किम् शब्द, पुंलिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

और सब विभक्ति में पुंलिङ्ग के समान रूप होता है ।

स्त्री लिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

यद् शब्द, पुंलिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

और सब विभक्ति में पुंलिङ्ग के समान होता है ।

स्त्री लिङ्ग ।

	एक बचन	द्वि बचन	बहु बचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

तद् शब्द, पुंलिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

और विभक्ति में पुंलिङ्ग के समान रूप होता है ।

स्त्री लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् शब्द ।

यह शब्द भी तद् शब्द के सदृश केवल एकार मात्र अधिक और पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एक वचन में मूर्द्धन्य ष होता है; यथा, एषः एषा ।

अदस् शब्द पुंलिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसक लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

और सब विभक्ति में पुंलिङ्ग के सदृश होता है ।

स्त्री लिङ्ग ।

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

संख्या वाचक शब्द ।

एक शब्द ।

यह तीनों लिङ्ग में सर्व शब्द के सदृश है

अनेक शब्द

यह शब्द बहु वचनान्त है

द्वि शब्द—द्वि वचनान्त ।

	पुंलिङ्ग द्वि वचन ।	स्त्री लिङ्ग द्वि वचन ।	नपुंसक लिङ्ग द्वि वचन ।
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि शब्द—बहु वचनान्त ।

	पुंलिङ्ग बहु वचन ।	नपुंसक लिङ्ग बहु वचन ।	स्त्रीलिङ्ग बहु वचन ।
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर् शब्द—बहु वचनान्त ।

	पुंलिङ्ग बहु वचन ।	नपुंसक लिङ्ग बहु वचन ।	स्त्री लिङ्ग बहु वचन ।
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
ष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
		चतुर्षु	चतसृषु

शब्द—बहु वचनान्त ।

चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु

तीनों लिङ्ग में इसी प्रकार के होते हैं ।

अष्टन् शब्द बहु वचनान्त ।

	बहु वचन		बहु वचन
प्रथमा	अष्टौ, अष्ट	द्वितीया	अष्टौ, अष्ट
तृतीया	अष्टाभिः, अष्टभिः	चतुर्थी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	षष्ठी	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टासु, अष्टसु		

यह शब्द तीनों लिङ्ग में समान हैं ।

पञ्चन् शब्द बहु वचनान्त ।

	बहु वचन		बहु वचन		बहु वचन
प्रथमा	पञ्च	द्वितीया	पञ्च	तृतीया	पञ्चभिः
चतुर्थी	पंचभ्यः	पञ्चमी	पंचभ्यः	षष्ठी	पंचानाम्
सप्तमी	पंचसु				

यह शब्द भी तीनों लिङ्ग में समान हैं ।

सप्तन्, नवन्, दशन्, आदि समस्त नकारान्त संख्या वाचक शब्द पंचन् शब्द के सदृश हैं ।

अव्यय शब्द ।

कुछ शब्द इस प्रकार के हैं कि उनके अन्तःस्थित के उत्तर विभक्ति नहीं रहती है ; सुतराम् यह शब्द जैसा है वैसही रहता है कुछ भिन्न नहीं होता है ; केवल अन्तेस्थित र और दन्त्य स के स्थान में विसर्ग होता है और द के स्थान में त् भी होता है इन्ही शब्दों को अव्यय कहते हैं ; यथा, प्रातर्, अन्तर्, स्वर् पुनर्, उच्चैस्, नीचैस्, शनैस्, वहिस्, नमस्, युगपत्, पृथक्, बिना, ऋते, स्वयम्, सायम्, वृथा, मृषा, मिथ्या, सह, साऽर्द्धम्, अलम्, अथ, एवम्, एव, नूनम्, धिक्, च, वा, तु, हि, भोस्, अथवा, प्र, परा, अप, सम्, नि, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ ।

यदि क्रिया के सहित योग होवे तो प्र से लेकर आ तक बीस अव्यय को उपसर्ग कहते हैं ।

स्त्री लिङ्ग प्रत्यय ।

अकारान्त शब्द को स्त्री लिङ्ग बनाने के लिये आ अथवा ई प्रत्यय होता है। यथा, खर्ब, खर्बा; स्थिर, स्थिरा; प्रबल, प्रबला; क्षम, क्षमा; वैश्य, वैश्या; शूद्र, शूद्रा; दृढ़, दृढ़ा; इत्यादि। वैष्णव, वैष्णवी; नद, नदी; हंस, हंसी; मृग, मृगी; गौर, गौरी; कुमार, कुमारी; सुन्दर, सुन्दरी इत्यादि।

यदि शब्द के अन्त में मत् अथवा वत् रहे तो उन शब्दों को स्त्री लिङ्ग करने के लिये अन्त में ईकार होता है। यथा, बुद्धिमत्, बुद्धिमती; श्रीमत्, श्रीमती; भक्तिमत्, भक्तिमती; बलवत्, बलवती; लज्जावत्, लज्जावती; विद्यावत्, विद्यावती; गुणवत्, गुणवती इत्यादि।

यदि शब्द के अन्त में अत् रहे तो उन शब्दों के अन्त में बहुधा ईकार होता है। तिसके मध्य में कुछ शब्दों के त् को न्ती होता है। यथा, गच्छत्, गच्छन्ती; तिष्ठत् तिष्ठन्ती; पश्यत् पश्यन्ती; पतत् पतन्ती; नृत्यत् नृत्यन्ती; वदत् वदन्ती; गायत् गायन्ती; ध्यायत् ध्यायन्ती; रुदत् रुदन्ती; कुर्वत् कुर्वन्ती; पृच्छत् पृच्छन्ती; दिपत् दिपन्ती; स्तुवत् स्तुवन्ती इत्यादि।

यदि स्त्री लिङ्ग शब्दों के अन्त में इन् रहे तो अन्त में ई होता है। यथा, कमलिन्, कमलिनी; मालिन्, मालिनी; मानिन्, मानिनी; शुभदायिन्, शुभदायिनी; मनोहारिन्, मनोहारिनी; चमत्कारिन्, चमत्कारिनी; मेधाविन्, मेधाविनी; मायाविन्, मायाविनी इत्यादि।

यदि स्त्री लिङ्ग शब्दों के अन्त में ह्रस्व उ होय तो उकार के आगे ई विकल्प करके होता है। यथा, मृदु, मृद्वी, मृदुः; साधु, साध्वी, साधुः; गुरु, गुर्वी, गुरुः; लघु, लघ्वी, लघुः इत्यादि।

यदि स्त्री लिङ्ग शब्दों के अन्त में ऋ रहे तो ऋकार के आगे ई होता है यथा, कर्तृ, कर्त्री; धातृ, धात्री; जनयितृ, जनयित्री; प्रसवितृ, प्रसवित्री इत्यादि।

कारक।

कारक छः प्रकार के हैं। अपादान, सम्प्रदान, करण, अधिकरण,

कर्म्म, कर्त्ता ।

अपादान ।

जिस से कोई वस्तु अथवा जीव चले, डरे, ग्रहण करे अथवा उत्पन्न होवे उसको अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, वृक्षात्पत्रम्पतति, वृक्ष से पत्र गिरता है ; व्याघ्रात् बिभेति, व्याघ्र से डरता है । सरोवरात् जलं गृह्णाति, सरोवर से जल लेता है। दुग्धात् घृतमुत्पद्यते, दूध से घी उत्पन्न होता है।

संप्रदान ।

जिस को कोई वस्तु दान किया जावे उसको संप्रदान कारक कहते हैं। संप्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, दरिद्राय धनं दीयताम्, दरिद्र को धन दो। मह्यं पुस्तकं देहि, मुझको पुस्तक दो। दीनेभ्यः अन्नं देहि, दुःखियों को अन्न दो ।

करण ।

जिस से कार्य सिद्ध होता है उसको करण कहते हैं । करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, हस्तेन गृह्णाति, हाथ से लेता है। चक्षुषा पश्यति, नेत्र से देखता है। दन्तेन चर्वति, दाँत से चबाता है। दण्डेन ताड़यति, दण्ड से ताड़न करता है । जलेन अग्निं निर्वापयति, जल से अग्नि बुझाता है ।

अधिकरण ।

क्रिया का जो आधार है वह अधिकरण कहा जाता है । अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है । यथा, शय्यायां शेते, बिस्तरे पर सोता है। आसने उपतिष्ठति, आसन पर बैठता है । गृहे तिष्ठति, घर में रहता है। विद्यायां अनुरागो विद्यते, विद्या में प्रीति है। सुखेऽभिलाषोऽस्ति, सुख में अभिलाषा है। दुग्धे माधुर्यमस्ति, दूध में मधुरता है। कलसे जलमस्ति, कलसा में जल है । तिलेषु तैलमस्ति, तिल में तेल है। पात्रे दुग्धं स्थापयति, पात्र में दूध रखता है। वर्षासु वृष्टिर्भवति, वर्षा काल में वृष्टि होती है। सायङ्काले सूर्योऽस्तं याति, सन्ध्या के समय सूर्य अस्त होता है । रात्रौ चन्द्रमा उदेति, रात्रि में चन्द्रमा उदय होता है ।

कर्म कारक ।

जो किया जावे, जो देखा जावे, जो खाया जावे, और जो पिया जावे, जो दान दिया जावे, अथवा जो स्पर्श किया जावे, वह कर्म कारक कहलाता है। कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, घटं करोति, घट बनाता है। चन्द्रम्पश्यति, चन्द्रमा को देखता है। अन्नं भुङ्क्ते, अन्न खाता है। दुग्धम्पिबति, दुग्ध पान करता है। धनं ददाति, धन देता है। गात्रं स्पृशति, शरीर स्पर्श करता है। शत्रुञ्जयति, शत्रु को जीतता है। शास्त्रम् अधीते, शास्त्र पढ़ता है। पुष्पम् चिनोति, फूल को बटोरता है। गुरुम् पृच्छति, गुरु को पूछता है। ग्रामम् गच्छति, गांवं को जाता है ।

कर्त्ता कारक ।

जो कोई काम करे वह कर्त्ता है; कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है । यथा, देवदत्तो गच्छति, देवदत्त जाता है; बालको रोदिति, बालक रोता है; मृगो धावति, मृग दौड़ता है; मृगौ धावतः, २ मृग दौड़ते हैं; मृगा धावन्ति, अनेक मृग दौड़ते हैं ।

विशेष शब्द के विशेष अर्थ के रीति से विभक्ति का निर्णय ।

सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है; यथा, हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्राः, इत्यादि ।

जिस स्थल में क्रिया पद अथवा कर्म पद न रहे केवल कोई वस्तु अथवा जीव समझाने के लिये शब्द प्रयोग किया जाय उस स्थल में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, वृक्षः, नदी पुष्पम्, जलम्, नरः, महिषः, राजा, वृक्षम्, पुस्तकम्, अन्नम्, वस्त्रम्, इत्यादि ।

धिक् प्रति, इत्यादि कई एक शब्द मिलाने से द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पापिनम् धिक्, पापी को धिक्; कृपणम् धिक्, कृपण को धिक्; गुरो माम्प्रति सदयो भव, हे गुरु मुझ पर दया करो; दीनम्प्रति दया उचिता, दुखिया के ऊपर दया करनी उचित है।

क्रिया के विशेषण में द्वितीया विभक्ति का एक वचन होता है।

और नपुंसक लिङ्ग के समान रूप होता है। यथा, शीघ्रङ्गच्छति, शीघ्र चलता है; सत्वरन्धावति, शीघ्र दौड़ता है; मधुरम् हसति, मधुर हँसता है।

सह, सार्द्धम्, अलम्, किम्, इत्यादि कई एक शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामः लक्ष्मणेन सह वनं जगाम, राम लक्ष्मण के सहित वन गये थे; केनापि सार्द्धम् विरोधो न कर्तव्यः, किसी के साथ विरोध करना उचित नहीं है; विवादेन अलम्, विवाद मत करो; कलहेन किम्, कलह से कुछ प्रयोजन नहीं।

निमित्त अर्थ में और नमस् शब्द के योग से चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, ज्ञानाय अध्ययनम्, ज्ञान के वास्ते पढ़ना; सुखाय धनोपार्जनम्, सुख के वास्ते धन बटोरना; परोपकाराय सतां जीवनम्, पराये के उपकार के लिये सज्जनों का जीवन; गुरवे नमः, गुरु को प्रणाम; पित्रे नमः, पिता को प्रणाम।

हेतु अर्थ में तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है यथा, भयेन कम्पते, डर से काँपता है; क्रोधेन ताड़यति, क्रोध से ताड़न करता है; हर्षात् नृत्यति, हर्ष से नाचता है; दुःखात् रोदिति, दुःख से रोती है।

अन्य, पृथक् इत्यादि कई एक शब्द के योग से अपेक्षा अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, मित्रादन्यः कः परित्रातुं समर्थः, मित्र के बिना कौन रक्षा कर सकता है; इदमस्मात् पृथक्, यह इस से जुदा है; धनात् विद्या गरीयसी, धन से विद्या श्रेष्ठ।

बिना शब्द के योग से द्वितीया तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, विद्यां बिना वृथा जीवनम्, विद्या बिना जीवन व्यर्थ; यत्नेन बिना किमपि न सिध्यति, यत्न बिना कुछ सिद्ध नहीं होता; पापात् बिना दुःखं न भवति, बिना पाप के दुःख नहीं होता है।

ऋते शब्द के योग से द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति होती है; यथा, श्रमम् ऋते विद्या न भवति, बिना परिश्रम विद्या नहीं होती है; धर्मात् ऋते सुखं न भवति, बिना धर्म सुख नहीं होता है।

सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, मम हस्तः, हमारा

हाथ ; तव पत्रः, तुम्हारा पत्र ; नद्याः जलम्, नदी का जल ; वृक्षस्य शाखा, वृक्ष का डार ; कोकिलस्य कलरवः, कोकिल का प्रिय शब्द ; प्रभोरादेशः, प्रभु की आज्ञा ।

सम, तुल्य, समान, सदृश, इत्यादि शब्द के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, विद्यया समम् धनम् नास्ति, विद्या के समान धन नहीं ; विनयस्य तुल्य गुणो नास्ति, विनय के तुल्य गुण नहीं है ।

जिस स्थल में अनेक के मध्य में एक वस्तु वा व्यक्ति की निश्चय किया जाने उस स्थल में वह निर्धारण कहा जाता है । निर्धारण अर्थ में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, पर्वतानांहिमालयः श्रेष्ठः, पर्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है ; कविषु कालिदासः श्रेष्ठः, कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है ।

विशेष्य विशेषण ।

जिससे कोई वस्तु वा जीव का बोध होता है उस को विशेष्य पद कहते हैं। यथा, गृहम्, जलम्, वृक्ष, लता, नौका, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पृथ्वी, चन्द्रः, सूर्य्यः, नक्षत्रम्, शिशु, इत्यादि ।

जिससे विशेष्य का गुण और अवस्था प्रकाश होवे वह विशेषण पद कहा जाता है। विशेषण पद प्रायः विशेष्य पद के पूर्व रहता है यथा, नूतनम् गृहम्, निर्मलम् जलम्, फलवान् वृक्षः, पुष्पिता लता, भग्ना नौका, छिन्नम् वस्त्रम्, उत्तमम् पुस्तकम्, गोलाकारा पृथ्वी, शीतलश्चन्द्रः, प्रदीप्त सूर्य्यः, उज्ज्वलम् नक्षत्रम्, धार्मिकः पुरुषः, सुशीलः शिशुः ।

कुछ विशेष्य शब्द पुंलिङ्ग कुछ स्त्री लिङ्ग कुछ नपुंसक लिङ्ग होता है। विशेष्य शब्द का जो लिङ्ग है वही लिङ्ग विशेषण शब्द का भी होता है। यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरम् गृहम्, उज्ज्वलः शशी, उज्ज्वला दीपशिखा, उज्ज्वलम् नक्षत्रम्, बुद्धिमान् पुरुषः, बुद्धिमती स्त्री, निर्मला बुद्धिः, निर्मलम् जलम् । विशेष्य पद जिस वचन का रहता है विशेषण पद भी वही वचन का होता है ; अर्थात् विशेष्य पद एक वचनान्त होने से विशेषण पद भी एक वचनान्त होता है ; विशेष्य पद बहु वचनान्त होने से विशेषण पद

भी बहु वचनान्त होता है ; यथा, बलवान् सिंहः, बलवन्तौ सिंहौ बलवन्तः सिंहाः, वेगवती नदी, वेगवत्यौ नद्यौ, वेगवत्यः नद्यः निविड़ं वनम्, निविड़े वने, निविड़ानि वनानि ।

विशेष्य पद की जो विभक्ति होती है वही विभक्ति विशेषण पद की भी होती है । यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरम्, शिशुम्, सुन्दरेण शिशुना, सुन्दराय शिशवे, सुन्दरात् शिशोः, सुन्दरस्य शिशोः सुन्दरे शिशौ । निर्मलम् जलम्, निर्मलेन जलेन, निर्मलाय जलाय निर्मलात् जलात्, निर्मलस्य जलस्य, निर्मले जले ।

तिङन्त प्रकरण ।

भू, स्था, गम्, दृश, आदि को धातु कहते हैं । एक एक धातु एक एक क्रिया समझी जाती है । धातु के उत्तर जो विभक्ति होती हैं उन को तिङ कहते हैं । इस लिए क्रिया वाचक पद तिङन्त कहा जाता है । क्रिया तीन काल की होती हैं, वर्त्तमान, अतीत भविष्यत् । जो उपस्थित है वह वर्त्तमान काल कहा जाता है । यथा, पश्यति, देखता है ; पश्यामि, देखता हूँ ; करोति, करता है ; करोमि, करता हूँ । जो गत हो गया वह अतीत काल कहा जाता है । यथा, ददर्श, देखा ; वा देख चुका, देखा था चकार, किया वा किया था । जो होने वाला है वह भविष्यत् काल कहा जाता है । यथा, गमिष्यामि, जाऊंगा ; करिष्यामि, करूंगा ।

क्रिया के तीन वचन होते हैं, एक वचन, द्वि वचन, बहु वचन एक वचन से एक पुरुष की क्रिया समझी जाती है ; द्वि वचन से दो पुरुष की क्रिया समझी जाती है ; बहु वचन से अनेक पुरुष की क्रिया समझी जाती है ; यथा, गच्छामि, जाता हूँ ; गच्छावः हम दोनों जाते हैं ; गच्छामः, हम सब जाते हैं ; गमिष्यसि, तुम जावगे ; गमिष्यथः, तुम दोनों जावगे ; गमिष्यथ, तुम सब कोई जावगे । गमिष्यति, वह जायगा ; गमिष्यतः, वह दोनों जायेंगे गमिष्यन्ति, वह सब कोई जायेंगे ।

प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में धातु के उत्तर भिन्न भिन्न विभक्ति होती हैं इस लिए क्रिया वाचक पद भिन्न

भिन्न होते हैं। अस्मद् शब्द से उत्तम पुरुष समझा जाता है। युष्मद् शब्द से मध्यम पुरुष समझा जाता है; इस के सिवाय प्रथम पुरुष समझा जाता है। यथा, अहङ्गच्छामि, मैं जाता हूं; त्वङ्गच्छसि, तुम जाते हो; राजा गच्छति, राजा जाता है।

अकर्मक क्रिया।

जिस क्रिया का कर्म पद आवश्यक नहीं है उस को अकर्मक अर्थात् कर्म शून्य क्रिया कहते हैं। यथा, अहन्तिष्ठामि, मैं स्थित हूं; शिशुः शेते, बालक सोता है; अश्वो धावति, घोड़ा दौड़ता है; नदी वर्द्धते, नदी बढ़ती है।

सकर्मक क्रिया।

जो क्रिया के सहित कर्म पद रहे उन को सकर्मक अर्थात् कर्म युक्त क्रिया कहते हैं। यथा, गुरुः शिष्यम् उपदिशति, गुरु शिष्य को उपदेश करता है; रामः रावणम् जघान, राम रावण को वध किया था।

धातु रूप। अकर्मक।

भू धातु होना—वर्त्तमान काल।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	भवति	भवसि	भवामि
द्वि वचन	भवतः	भवथः	भवावः
बहु वचन	भवन्ति	भवथ	भवामः

अतीत काल।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	बभूव	बभूविथ	बभूव
द्वि वचन	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
बहु वचन	बभूवुः	बभूव	बभूविम

भविष्यत्काल।

एक वचन	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्वि वचन	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहु वचन	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	भवतु	भव	भवानि
द्वि वचन	भवताम्	भवतम्	भवाव
बहु वचन	भवन्तु	भवत	भवाम

जब धातुओं का प्रेरणार्थक प्रयोग करना हो तो प्रायः उस की आदि स्वर को वृद्धि कर देते हैं और पीछे यकार लगा देते हैं। जैसे भवति, वह होता है, भावयति, वह होवाता है ; और इस प्रेरणार्थक धातुओं के पीछे भी, ति तः आदि क्रिया के चिह्न सब सामान्य क्रिया के समान ही लगाये जाते हैं।

जब क्रिया के करने में कर्ता को बहुतही इच्छा जताना हो तो प्रायः धातु को द्वित्व कर देते हैं और धातु के पीछे और क्रिया के चिह्न ति आदि के पूर्व एक स लगा देते हैं जैसे भवति, वह होता है बुभूषति वह होने को बहुतही इच्छा रखता है। इस प्रकार की क्रिया के चिह्न सामान्य क्रियाओं के ति आदि के समान ही लगाये जाते हैं।

स्था धातु स्थिति, रहना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	तिष्ठति	तिष्ठसि	तिष्ठामि
द्वि वचन	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
बहु वचन	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

अतीत काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	तस्थौ	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थौ
द्वि वचन	तस्थतुः	तस्थथुः	तस्थिव
बहु वचन	तस्थुः	तस्थ	तस्थिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	स्थास्यति	स्थास्यसि	स्थास्यामि
द्वि वचन	स्थास्यतः	स्थास्यथः	स्थास्यावः
बहु वचन	स्थास्यन्ति	स्थास्यथ	स्थास्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	तिष्ठतु	तिष्ठ	तिष्ठानि
द्वि वचन	तिष्ठताम्	तिष्ठतम्	तिष्ठाव
बहु वचन	तिष्ठन्तु	तिष्ठत	तिष्ठाम

प्रेरणार्थक क्रिया स्थापयति, वह रखवाता है इत्यादि; इच्छा बोधक क्रिया तिष्ठासति ठहरने की इच्छा रखता है ।

हस धातु, हसना—वर्त्तमान काल ।

एक वचन	हसति	हससि	हसामि
द्वि वचन	हसतः	हसथः	हसावः
बहु वचन	हसन्ति	हसथ	हसामः

अतीत काल ।

एक वचन	जहास	जहसिथ	जहास
द्वि वचन	जहसतुः	जहसथुः	जहसिव
बहु वचन	जहसुः	जहस	जहसिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	हसिष्यति	हसिष्यसि	हसिष्यामि
द्वि वचन	हसिष्यतः	हसिष्यथः	हसिष्यावः
बहु वचन	हसिष्यन्ति	हसिष्यथ	हसिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	हसतु	हस	हसानि
द्वि वचन	हसताम्	हसतम्	हसाव
बहु वचन	हसन्तु	हसत	हसाम

प्रेरणार्थक क्रिया हासयति वह हंसाता है इत्यादि; इच्छा बोधक क्रिया जिहसिषति हसने की इच्छा रखता है ।

रुद् धातु, रोना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्वि वचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
बहु वचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

अतीत काल ।

एक वचन	रुरोद	रुरोदिथ	रुरोद
द्वि वचन	रुरुदतुः	रुरुदथुः	रुरुदिव
बहु वचन	रुरुदुः	रुरुद	रुरुदिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	रोदिष्यति	रोदिष्यसि	रोदिष्यामि
द्वि वचन	रोदिष्यतः	रोदिष्यथः	रोदिष्यावः
बहु वचन	रोदिष्यन्ति	रोदिष्यथ	रोदिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	रोदितु	रुदिहि	रोदानि
द्वि वचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
बहु वचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

प्रेरणार्थक क्रिया रोदयति ; इच्छा बोधक क्रिया रुरुदिषति इत्यादि ।

पत् धातु, पतन गिरना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	पतति	पतसि	पतामि
द्वि वचन	पततः	पतथः	पतावः
बहु वचन	पतन्ति	पतथ	पतामः

अतीत काल ।

एक वचन	पपात	पेतिथ	पपात
द्वि वचन	पेततुः	पेतथुः	पेतिव
बहु वचन	पेतुः	पेत	पेतिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	पतिष्यति	पतिष्यसि	पतिष्यामि
द्वि वचन	पतिष्यतः	पतिष्यथः	पतिष्यावः
बहु वचन	पतिष्यन्ति	पतिष्यथ	पतिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	पततु	पत	पतानि
द्वि वचन	पतताम्	पततम्	पताव

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
बहु बचन	पतन्तु	पतत	पताम

प्रेरणार्थक क्रिया पातयति, इच्छा बोधक क्रिया पिपतिषति इत्यादि ।

सकर्मक कृ धातु, करण करना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक बचन	करोति	करोषि	करोमि
द्वि बचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्वः
बहु बचन	कुर्वन्ति	कुरुथ	कुर्मः

अतीत काल ।

एक बचन	चकार	चकर्थ	चकार
द्वि बचन	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहु बचन	चक्रुः	चक्र	चकृम

भविष्यत्काल ।

एक बचन	करिष्यति	करिष्यसि	करिष्यामि
द्वि बचन	करिष्यतः	करिष्यथः	करिष्यावः
बहु बचन	करिष्यन्ति	करिष्यथ	करिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक बचन	करोतु	कुरु	करवाणि
द्वि बचन	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहु बचन	कुर्वन्तु	कुरुत	करवाम

प्रेरणार्थक क्रिया, कारयति कराता है । इच्छा बोधक क्रिया चिकीर्षति करने चाहता है इत्यादि ।

गम् धातु, गमन, चलना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक बचन	गच्छति	गच्छसि	गच्छामि
द्वि बचन	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
बहु बचन	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

अतीत काल ।

एक बचन	जगाम	जगमिथ, जगन्थ	जगाम

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
द्वि वचन	जग्मतुः	जग्मथुः	जग्मिव
बहु वचन	जग्मुः	जग्म	जग्मिम

भविष्यत्काल।

एक वचन	गमिष्यति	गमिष्यसि	गमिष्यामि
द्वि वचन	गमिष्यतः	गमिष्यथः	गमिष्यावः
बहु वचन	गमिष्यन्ति	गमिष्यथ	गमिष्यामः

अनुज्ञा।

एक वचन	गच्छतु	गच्छ	गच्छानि
द्वि वचन	गच्छताम्	गच्छतम्	गच्छाव
बहु वचन	गच्छन्तु	गच्छत	गच्छाम

प्रेरणार्थक क्रिया गमयति, चलाता है। इच्छा बोधक जिगमिषति जाने चाहता है।

श्रु धातु श्रवण, सुनना—वर्त्तमान काल।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्वि वचन	शृणुतः	शृणुथः	शृण्वः, शृणुवः
बहु वचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृण्मः, शृणुमः

अतीत काल।

एक वचन	शुश्राव	शुश्रोथ	शुश्राव
द्वि वचन	शुश्रुवतुः	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
बहु वचन	शुश्रुवुः	शुश्रुव	शुश्रुम

भविष्यत्काल।

एक वचन	श्रोष्यति	श्रोष्यसि	श्रोष्यामि
द्वि वचन	श्रोष्यतः	श्रोष्यथः	श्रोष्यावः
बहु वचन	श्रोष्यन्ति	श्रोष्यथ	श्रोष्यामः

अनुज्ञा।

एक वचन	शृणोतु	शृणु	शृणवानि
द्वि वचन	शृणुताम्	शृणुतम्	शृणवाव
बहु वचन	शृण्वन्तु	शृणुत	शृणवाम

प्रेरणार्थक क्रिया श्रावयति सुनवाता है, इच्छा बोधक क्रिया शुश्रूषति सुनने चाहता है।

दृश धातु दर्शन, देखना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	पश्यति	पश्यसि	पश्यामि
द्वि वचन	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहु वचन	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

अतीत काल ।

एक वचन	ददर्श	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददर्श
द्वि वचन	ददृशतुः	ददृशथुः	ददृशिव
बहु वचन	ददृशुः	ददृश	ददृशिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यामि
द्वि वचन	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यावः
बहु वचन	द्रक्ष्यन्ति	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	पश्यतु	पश्य	पश्यानि
द्वि वचन	पश्यताम्	पश्यतम्	पश्याव
बहु वचन	पश्यन्तु	पश्यत	पश्याम

प्रेरणार्थक क्रिया दर्शयति देखाता है । इच्छा बोधक क्रिया दिदृक्षति देखने चाहता है ।

दा धातु, देना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	ददाति	ददासि	ददामि
द्वि वचन	दत्तः	दत्थः	दद्वः
बहु वचन	ददति	दत्थ	दद्मः

अतीत काल ।

एक वचन	ददौ	ददिथ, ददाथ	ददौ
द्वि वचन	ददतुः	ददथुः	ददिव
बहु वचन	ददुः	दद	ददिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	दास्यति	दास्यसि	दास्यामि

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
द्वि बचन	दास्यतः	दास्यथः	दास्यावः
बहु बचन	दास्यन्ति	दास्यथ	दास्यामः

अनुज्ञा ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक बचन	ददातु	देहि	ददानि
द्वि बचन	दत्ताम्	दत्तम्	ददाव
बहु बचन	ददतु	दत्त	ददाम

प्रेरणार्थक क्रिया दापयति दिलाता है ; दित्सति देने चाहता है ।

ग्रह धातु, ग्रहण लेना—वर्त्तमान काल ।

एक बचन	गृह्णाति	गृह्णासि	गृह्णामि
द्वि बचन	गृह्णीतः	गृह्णीथः	गृह्णीवः
बहु बचन	गृह्णन्ति	गृह्णीथ	गृह्णीमः

अतीत काल ।

एक बचन	जग्राह	जग्रहिथ	जग्राह
द्वि बचन	जगृहतुः	जगृहथुः	जगृहिव
बहु बचन	जगृहुः	जगृह	जगृहिम

भविष्यत्काल ।

एक बचन	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यामि
द्वि बचन	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यावः
बहु बचन	ग्रहीष्यन्ति	ग्रहीष्यथ	ग्रहीष्यामः

अनुज्ञा ।

एक बचन	गृह्णातु	गृहाण	गृह्णानि
द्वि बचन	गृह्णीताम्	गृह्णीतम्	गृह्णाव
बहु बचन	गृह्णन्तु	गृह्णीत	गृह्णाम

प्रेरणार्थक क्रिया ग्राहयति ग्रहण कराता है, इच्छा बोधक क्रिया जिघृक्षति इत्यादि ।

प्रच्छ धातु पूछना— वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक बचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
द्वि बचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहु बचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

अतीत काल ।

एक बचन	पप्रच्छ	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छ
द्वि बचन	पप्रच्छतुः	पप्रच्छथुः	पप्रच्छिव
बहु बचन	पप्रच्छुः	पप्रच्छ	पप्रच्छिम

भविष्यत्काल ।

एक बचन	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यामि
द्वि बचन	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यावः
बहु बचन	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामः

अनुज्ञा ।

एक बचन	पृच्छतु	पृच्छ	पृच्छानि
द्वि बचन	पृच्छताम्	पृच्छतम्	पृच्छाव
बहु बचन	पृच्छन्तु	पृच्छत	पृच्छाम

प्रेरणार्थक क्रिया प्रच्छयति पुछवाता है ; इच्छा बोधक क्रिया पिपृच्छिषति पूछने चाहता है इत्यादि ।

ब्रू धातु कथन बोलना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक बचन	ब्रवीति	ब्रवीषि	ब्रवीमि
द्वि बचन	ब्रूतः	ब्रूथः	ब्रूवः
बहु बचन	ब्रुवन्ति	ब्रूथ	ब्रूमः

अतीत काल ।

एक बचन	उवाच	उवचिथ, उवक्थ	उवाच
द्वि बचन	ऊचतुः	ऊचथुः	ऊचिव
बहु बचन	ऊचुः	ऊच	ऊचिम

भविष्यत्काल ।

एक बचन	वक्ष्यति	वक्ष्यसि	वक्ष्यामि
द्वि बचन	वक्ष्यतः	वक्ष्यथः	वक्ष्यावः
बहु बचन	वक्ष्यन्ति	वक्ष्यथ	वक्ष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	ब्रवीतु	ब्रूहि	ब्रवाणि
द्वि वचन	ब्रूताम्	ब्रूतम्	ब्रवाव
बहु वचन	ब्रुवन्तु	ब्रूत	ब्रवाम

प्रेरणार्थक वाचयति, इच्छा बोधक विवक्षति ।

भक्ष धातु भोजन, खाना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	भक्षयति	भक्षयसि	भक्षयामि
द्वि वचन	भक्षयतः	भक्षयथः	भक्षयावः
बहु वचन	भक्षयन्ति	भक्षयथ	भक्षयामः

अतीत काल ।

एक वचन	भक्षयामास	भक्षयामासिथ	भक्षयामास
द्वि वचन	भक्षयामासतुः	भक्षयामासथुः	भक्षयामासिव
बहु वचन	भक्षयामासुः	भक्षयामास	भक्षयामासिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यामि
द्वि वचन	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यावः
बहु वचन	भक्षयिष्यन्ति	भक्षयिष्यथ	भक्षयिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	भक्षयतु	भक्षय	भक्षयाणि
द्वि वचन	भक्षयताम्	भक्षयतम्	भक्षयाव
बहु वचन	भक्षयन्तु	भक्षयत	भक्षयाम

प्रेरणार्थक भक्षयति, इच्छा बोधक बिभक्षिषति ।

पा धातु, पान पीना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	पिबति	पिबसि	पिबामि
द्वि वचन	पिबतः	पिबथः	पिबावः
बहु वचन	पिबन्ति	पिबथ	पिबामः

अतीत काल ।

एक वचन	पपौ	पपिथ, पपाथ	पपौ

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
द्वि वचन	पपतुः	पपथुः	पपिव
बहु वचन	पपुः	पप	पपिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	पास्यति	पास्यसि	पास्यामि
द्वि वचन	पास्यतः	पास्यथः	पास्यावः
बहु वचन	पास्यन्ति	पास्यथ	पास्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	पिबतु	पिब	पिबानि
द्वि वचन	पिबताम्	पिबतम्	पिबाव
बहु वचन	पिबन्तु	पिबत	पिबाम

प्रेरणार्थक पाययति ; इच्छा बोधक पिपासति ।

इष् धातु, इच्छा—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्वि वचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहु वचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

अतीत काल ।

एक वचन	इयेष	इयेषिथ	इयेष
द्वि वचन	ईषतुः	ईषथुः	ईषिव
बहु वचन	ईषुः	ईष	ईषिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	एषिष्यति	एषिष्यसि	एषिष्यामि
द्वि वचन	एषिष्यतः	एषिष्यथः	एषिष्यावः
बहु वचन	एषिष्यन्ति	एषिष्यथ	एषिष्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	इच्छतु	इच्छ	इच्छामि
द्वि वचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहु वचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

प्रेरणार्थक एषयति ; इच्छा बोधक एषिषति ।

ज्ञा धातु ज्ञान, जानना—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्वि वचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
बहु वचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

अतीत काल ।

एक वचन	जज्ञौ	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञौ
द्वि वचन	जज्ञतुः	जज्ञथुः	जज्ञिव
बहु वचन	जज्ञुः	जज्ञ	जज्ञिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	ज्ञास्यति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यामि
द्वि वचन	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यावः
बहु वचन	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामः

अनुज्ञा

एक वचन	जानातु	जानीहि	जानानि
द्वि वचन	जानीताम्	जानीतम्	जानाव
बहु वचन	जानन्तु	जानीत	जानाम

प्रेरणार्थक ज्ञापयति ; इच्छा बोधक जिगीप्सति ।

प्र पूर्वक आप धातु, प्राप्ति पावन—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	प्राप्नोति	प्राप्नोषि	प्राप्नोमि
द्वि वचन	प्राप्नुतः	प्राप्नुथः	प्राप्नुवः
बहु वचन	प्राप्नुवन्ति	प्राप्नुथ	प्राप्नुमः

अतीत काल ।

एक वचन	प्राप	प्रापिथ	प्राप
द्वि वचन	प्रापतुः	प्रापथुः	प्रापिव
बहु वचन	प्रापुः	प्राप	प्रापिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	प्राप्स्यति	प्राप्स्यसि	प्राप्स्यामि
द्वि वचन	प्राप्स्यतः	प्राप्स्यथः	प्राप्स्यावः

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
बहु वचन	प्राप्स्यन्ति	प्राप्स्यथ	प्राप्स्यामः

अनुज्ञा ।

एक वचन	प्राप्नोतु	प्राप्नुहि	प्राप्नवानि
द्वि वचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नवाव
बहु वचन	प्राप्नुवन्तु	प्राप्नुत	प्राप्नवाम

प्रेरणार्थक प्रापयति ; इच्छा बोधक प्रेप्सति ।

त्यज धातु, त्याग—वर्त्तमान काल ।

	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एक वचन	त्यजति	त्यजसि	त्यजामि
द्वि वचन	त्यजतः	त्यजथः	त्यजावः
बहु वचन	त्यजन्ति	त्यजथ	त्यजामः

अतीत काल ।

एक वचन	तत्याज	तत्यजिथ, तत्यक्थ	तत्याज
द्वि वचन	तत्यजतुः	तत्यजथुः	तत्यजिव
बहु वचन	तत्यजुः	तत्यज	तत्यजिम

भविष्यत्काल ।

एक वचन	त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यामि
द्वि वचन	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यथः	त्यक्ष्यावः
बहु वचन	त्यक्ष्यन्ति	त्यक्ष्यथ	त्यक्ष्याम

अनुज्ञा ।

एक वचन	त्यजतु, त्यजतात्	त्यज, त्यजतात्	त्यजानि
द्वि वचन	त्यजताम्	त्यजतम्	त्यजाव
बहु वचन	त्यजन्तु	त्यजत	त्यजाम

प्रेरणार्थक त्याजयति ; इच्छा बोधक तितिक्षति ।

कर्तृ वाच्य ।

जब कर्तृ कारक में प्रथमा विभक्ति और कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति रहे तो उनको कर्तृ वाच्य प्रयोग कहते हैं ; यथा, कुम्भकारः घटङ्करोति, कुम्हार घट बनाता है ; देवदत्तः ग्रामङ्गच्छति, देवदत्त गांव को जाता है ; शिशुः पुस्तकं पठति ; बालक पुस्तक पढ़ता

है ; अश्वः जलं पिबति, घोड़ा जल पीता है ।

कर्तृ वाच्य में कर्त्ता का जो बचन होता है, वही बचन क्रिया का भी होता है, अर्थात् कर्ता एक बचनान्त होने से क्रिया में एक बचन होता है, कर्ता द्विबचनान्त होने से क्रिया द्विबचनान्त होती है, कर्ता बहुबचनान्त होने से क्रिया बहुबचनान्त होती है, यथा कुम्भकारः घटङ्करोति, कुम्भकारौ घटं कुरुतः, कुम्भकाराः घटं कुर्वन्ति । शिशुः पुस्तकं पठति, शिशू पुस्तकं पठतः, शिशवः पुस्तकं पठन्ति ।

कर्म्म वाच्य ।

जब कर्तृ कारक में तृतीया बिभक्ति और कर्म कारक में प्रथमा बिभक्ति रहे तो उन को कर्म वाच्य प्रयोग कहते हैं ; यथा, कुम्भकारेण घटः क्रियते, कुम्भार घट को बनाता है ; शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते, शिष्य गुरु से पूछता है ; मया चन्द्रः दृश्यते, मैं चन्द्रमा को देखता हूं ।

कर्तृ वाच्य में कर्ता कारक का जो बचन होता है क्रिया का भी वही बचन होता है कर्म वाच्य में वैसा नहीं होता । कर्म वाच्य में कर्म का जो बचन होता है क्रिया का भी वही बचन होता है अर्थात् कर्म्म एक बचनान्त होने से क्रिया भी एक बचनान्त होती है ; कर्म्म द्वि बचनान्त होने से क्रिया द्वि बचन होती है ; कर्म्म बहु बचनान्त होने से क्रिया बहु बचनान्त होती है ; यथा, कुम्भकारेण घटः क्रियते, कुम्भकारेण घटौ क्रियेते, कुम्भकारेण घटाः क्रियन्ते । शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते, शिष्येण गुरू पृच्छ्येते, शिष्येण गुरवः पृच्छ्यन्ते ।

भाव वाच्य ।

जिस स्थल में कर्तृ कारक में तृतीया विभक्ति होती है पर कर्म पद न रहे तो उन को भाव वाच्य प्रयोग कहते हैं भाववाच्य को सर्वदा एक बचनान्त क्रिया होती है ; यथा, मया स्थीयते, मैं स्थित हूं ; आवाभ्यां स्थीयते, हम दोनों स्थित हैं ; अस्माभिः स्थीयते, हम सब स्थित हैं ।

कृदन्त ।

धातु के उत्तर तुम् क्त्वा आदि कई एक प्रत्यय होते हैं, उन प्रत्ययों

को कृत् कहते हैं; कृत् प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होते हैं वे प्रायः क्रिया के सदृश अर्थ प्रकाशक होते हैं, कृत् प्रत्यय अनेक हैं उन में से कुछ विषय संक्षेप से लिखा जाता है ।

तुम् ।

निमित्त अर्थ समझने के लिए धातु के उत्तर तुम प्रत्यय होता है । यथा, दा धातु तुम्, दातुम् देने के निमित्त । स्था धातु तुम्; स्थातुम् ठहरने के निमित्त । पा धातु तुम्, पातुम्, पीने के निमित्त । हन् धातु तुम्, हन्तुम्; मारने के लिए । गम् धातु तुम्, गन्तुम्, जाने के लिए । ग्रह धातु तुम्, ग्रहीतुम्, ग्रहण करने के निमित्त । कृ धातु तुम्, कर्तुम, करने के लिए । वच धातु तुम्, वक्तुम्, कहने के लिए । जि धातु तुम्, जेतुम्, जय करने के निमित्त । दृश धातु तुम्, द्रष्टुम्, देखने के लिए । चिंति धातु तुम्, चिन्तयितुम् चिन्ता करने के लिए । भुज धातु तुम्, भोक्तुम्, खाने के निमित्त, इत्यादि ।

त्वा ।

अनन्तर अर्थ में धातु के उत्तर त्वा प्रत्यय होता है; यथा, कृ धातु त्वा, कृत्वा, करके, करणानन्तर । जि धातु त्वा, जित्वा, जीत कर, जयानन्तर । गम्, धातु त्वा, गत्वा, जाकर, गमनानन्तर । भुज धातु त्वा, भुक्त्वा, खा कर, भोजनानन्तर । दृश धातु त्वा, दृष्ट्वा, देख कर, दर्शनानन्तर । दा धातु त्वा, दत्वा, देकर, दानानन्तर । पा धातु त्वा, पीत्वा, पीकर, पानानन्तर । चिन्ति धातु त्वा, चिन्तयित्वा, चिंता कर के चिंतनानन्तर । वच धातु त्वा, उक्त्वा, कह कर, कथनानन्तर । ग्रह धातु त्वा, गृहीत्वा, लेकर, ग्रहणानन्तर इत्यादि ।

बार २ करता है इस अर्थ में धातु के उत्तर त्वा प्रत्यय हो जाता है और तब इस को द्वित्व हो जाता है यथा, स्मृ धातु त्वा, स्मृत्वा, स्मरण कर कर, ध्या धातु त्वा, ध्यात्वा, ध्यान कर कर ।

यप् ।

यदि धातु के पूर्व उपसर्ग रहे तो अनन्तर अर्थ में धातु के उत्तर यप् प्रत्यय होता है । यथा, आ—दाधातु यप्, आदाय, ग्रहण

करके, ग्रहणानन्तर। आ—गमधातु यप्, आगम्य, आगत्य, आकर, आगमनानन्तर। आ—हनधातु यप आहत्य, मार कर आघातानन्तर। वि—जिधातु यप विजित्य, जीत कर जयानन्तर। सं—स्मृधातु यप्, संस्मृत्य, स्मरण कर के, स्मरणानन्तर। प्र—नम् धातु यप, प्रणम्य, प्रणाम कर के, प्रणामानन्तर। तुम, त्वा, और यप्, प्रत्यय होने से जो शब्द सिद्ध होते हैं उन को अव्यय कहते हैं। इन शब्दों के प्रयोग करने से प्रथमा विभक्ति का एक बचन होता है।

तव्य, अनीय, य।

भविष्यत्काल में धातु के उत्तर कर्म वाच्य और भाववाच्य में तव्य, अनीय, य, यह तीन प्रत्यय होते हैं; इन प्रत्ययों से जो शब्द सिद्ध होते हैं उन के रूप पुंलिङ्ग में नर शब्द के सदृश, स्त्रीलिङ्ग में लता शब्द के सदृश, और नपुंसक लिङ्ग में फल शब्द के सदृश होते हैं।

कर्मवाच्य में तव्य, अनीय, य प्रत्यय होने से जो शब्द सिद्ध होते हैं वे कर्म के विशेषण होते हैं इस लिये कर्म पद में जो लिङ्ग विभक्ति वा बचन होते हैं वही लिङ्ग विभक्ति और बचन उन शब्दों के भी होते हैं; यथा पठ धातु अनीय, मया ग्रन्थः पठनीयः, मैं ग्रन्थ पढ़ूंगा। मया पत्रिका पठनीया, मया पुस्तकं पठनीयम्। पठनीयं ग्रन्थं, पठनीयेन ग्रन्थेन, पठनीयाय ग्रन्थाय, पठनीयात् ग्रन्थात्, पठनीयस्य ग्रन्थस्य, पठनीये ग्रन्थे, पठनीययोः ग्रन्थयोः, पठनीयेषु ग्रन्थेषु।

भाव वाच्य में तव्य, अनीय, य प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होते हैं उनका रूप अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के प्रथमा विभक्ति के एक बचन के सदृश होता है; यथा, स्था धातु तव्य, मया स्थातव्यम्, मैं रहूंगा। क्रीड़ धातु तव्य, मया क्रीड़ितव्यम्. मैं क्रीड़ा करूंगा। लज्ज धातु तव्य, तेन लज्जितव्यम, वह लज्जित होगा। तव्य अनीय य इन प्रत्ययों का किसी २ स्थल में केवल धातु के साथ योग होने से पद होता है; किसी २ स्थल में धातु का कुछ आकार बदल जाता है। यथा, दा धातु तव्य दातव्यम्; अनीय, दानीयम्; य, देयम्। जि धातु जेतव्यम् जयनीयम् जेयम्। श्री धातु श्रयितव्यम्, श्रयणीयम्, श्रेयम्। श्रू धातु श्रोतव्यम् श्रवणीयम्,

श्राव्यम् । भू धातु भवितव्यम्, भवनीयम्, भव्यम् । कृ धातु, कर्तव्य करणीयम्, कार्यम् । ग्रह धातु, ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, ग्राह्यम् । गम धातु, गंतव्यम्, गमनीयम्, गम्यम् । दृश धातु, द्रष्टव्यम्, दर्शनीयम्, दृश्यम् । वच धातु वक्तव्यम्, वचनीयम्, वाच्यम् । भुज धातु भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम् । चिंति धातु चिंतयितव्यम्, चिंतनीयम्, चिन्त्यम् ।

तीनों काल में कर्तृ वाच्य में धातु के आगे ण्वुल और तृच और अण और क य आदि प्रत्यय होते हैं एभी कृत्य प्रत्यय कहलाते हैं पचति आदि जो धातु के रूप के अर्थ उसी सदृश अर्थ इन प्रत्ययों के होने से भी होता है ।

पच यज् चिन्त और याच् धातु में ण्वुल् प्रत्यय से पाचकः याजकः चिंतकः क्रीड़् क्रीड़कः कृञ् कारकः, हृञ् हारकः, लूञ्, लावकः, पूञ् पावकः, दा दायकः, दरिद्रा दरिद्रायकः, शम् शमकः, दम् दमकः, लभ् लम्भकः । तृच् प्रत्यय से पच् पक्ता, यज् यष्टा, हृञ् हर्ता, भृञ् भर्ता, लूञ् लविता, पूञ् पविता, दा दाता, धा धाता, पा पाता, भा भाता, क्रीड् क्रीडिता, दरिद्र दरिद्रता, लभ् लब्धा । अण् से कृञ् कुम्भकारः, हृञ् भारहारः, वरहारः, वह् वारिवाहः ; दा धनदः बुद्धिदः मतिदः, फलदः ; घ्रा घ्रः, प पालिवः, घ्रा जिघ्रः, धा धमः, दृश् दृशः ।

तवत् ।

अतीत काल में धातु के उत्तर कर्तृ वाच्य में तवत् प्रत्यय होता है। तवत् प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्ता का विशेषण होता है इस लिये कर्ता का जो लिङ्ग विभक्ति और बचन होता है वही लिङ्ग विभक्ति और बचन उन शब्दों का भी होता है इन शब्दों का रूप पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में श्रीमत् शब्द के सदृश होता है, स्त्रीलिङ्ग में नदी शब्द के सदृश होता है । जि धातु तवत्, जितवत्, पुं, जितवान्, जितवन्तौ जितवंतः ; नपुंसक लिङ्ग, जितवत्, जितवती, जितवन्ति ; स्त्री, जितवती, जितवत्यौ, जितवत्यः ; रामः रावणं जितवान्, राम ने रावण को जीत लिया था ; श्रु धातु, अहं शास्त्रम् श्रुतवान्, मैंने शास्त्र

सुना। कृ धातु, स किंकृतवान्, उस ने क्या किया; इसी प्रकार में स्था धातु स्थितवान्, दा धातु दत्तवान्, गम धातु गतवान्, हन धातु हतवान्, ग्रह धातु गृहीतवान्, दृश धातु दृष्टवान, ज्ञा धातु ज्ञातवान्, वच धातु उक्तवान्, भुज धातु भुक्तवान्, चिंति धातु चिंतितवान्।

त।

अतीत काल में धातु के उत्तर कर्मवाच्य में त प्रत्यय होता है। जि धातु त जितः, कृ धातु कृतः, ग्रह धातु गृहीतः, दा धातु दत्तः, दृश धातु दृष्टः, ज्ञा धातु ज्ञातः, श्रु धातु श्रुतः, वच धातु उक्तः।

कर्म वाच्य में त प्रत्यय होने से जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्म का विशेषण होता है इस लिये कर्म के जो लिङ्गादि होते हैं वही लिङ्गादि उन शब्दों के भी होते हैं। त प्रत्ययान्त शब्द का रूप पुंलिङ्ग में राम शब्द के समान्, नपुंसक लिङ्ग में फल शब्द के समान, स्त्रीलिङ्ग में लता शब्द के समान होता है। पठ धातु त, तेन ग्रन्थः पठितः; उसने ग्रन्थ पढ़ा है। तेन पत्री पठिता, उस ने पत्री पढ़ा। तेन पुस्तकं पठितम्, उस ने पुस्तक पढ़ा है।

अतीत काल में अधिकरण वाच्य में स्थिरार्थक और गत्यर्थक और भोजनार्थक धातु के उत्तर त प्रत्यय होने से जो रूप सिद्ध होते हैं सो उसके कर्ता में षष्ठी विभक्ति हो जाती है। और अधिकरण में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा स्थिरार्थक आस धातु मुकुन्दस्यासितमिदम्, मुकुन्द इस स्थान में बैठा था, इदं यातं रमापतेः, रमा पति इस मार्ग में गया, भुक्तमेतदनन्तस्य, अनन्त ने इस पत्तलों में खाया।

अकर्मक धातु के उत्तर और गम् रुह आदि सकर्मक धातु के उत्तर कर्तृ वाच्य में त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्ता का विशेषण होता है। मृ धातु, पुरुषो मृतः, पुरुष मर गया; स्त्री मृता, स्त्री मर गई; अपत्यं मृतम्; पुत्र मर गया। भू धातु भूतः, स्था धातु स्थितः, लज्ज धातु लज्जितः, भी धातु भीतः, जागृ धातु जागरितः, गम धातु गतः, स गृहं गतः, वह घर गया; रुह धातु रूढ़ः, वानरो वृक्षम् आरूढ़ः, बानर वृक्ष पर चढ़ गया।

अकर्मक और सकर्मक धातु के उत्तर भाव वाच्य में त प्रत्यय होता है भाव वाच्य में त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है, उन शब्दों का सर्वदा नपुंसक लिङ्ग का प्रथमा विभक्ति एक वचनान्त के समान रूप होता है ; यथा, मयाजितं, मुझ से जीता गया ; तेन कुत्र स्थितम्, वह कहां रहता ; त्वया दृष्टम्, तुम ने देखा ; शिशुना रुदितम्, लड़के ने रोदन किया ; मया भुक्तम्, मैंने खाया ; स्त्रिया लज्जितम्, स्त्री लज्जित हुई ; तेन जागरितम्, वह जागा ; चौरेण पलायितम्, चोर भागा।

समास।

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहते हैं। वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहा जाता है। वृक्ष, गिरि, पशु, भ्रातृ आदि शब्द में विभक्ति योग नहीं हुई इस अवस्था में इन को नाम कहते हैं। वृक्षः, वृक्षौ, वृक्षाः ; गिरिः, गिरी, गिरयः ; पशुः, पशू, पशवः ; भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः, यह सब शब्द विभक्ति युक्त हुए हैं इस लिए अब यह पद कहे जाते हैं। प्रत्येक पद के अन्त में एक एक विभक्ति रहती है कभी दो तीन पद एकट्टा हो सकता है तो उस समय केवल अन्त के पद में विभक्ति रहती है पूर्व पद में विभक्ति नहीं रहती यथा, सुशील बालकः, पहले सुशीलः बालकः ऐसा रूप रहा परन्तु दो पद एक होने से सुशील बालकः हुआ। योग होने के कारण सुशीलः पद में विभक्ति नहीं रहती है बालकः पद अन्त में है इस लिए उसी में विभक्ति हुई। इसी प्रकार दो वा अनेक पद के योग को समास कहते हैं।

समास छः प्रकार ; कर्मधारय, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुब्रीहि, द्विगु, अव्ययीभाव।

कर्मधारय।

विशेषण और विशेष्य पद का जो समास होता है वह कर्मधारय कहा जाता है। यथा, उन्नतः तरुः, उन्नततरुः, नीलम् उत्पलम्, नीलोत्पलम् ; गभीरः कूपः, गभीरकूपः ; सुन्दरः पुरुषः, सुन्दरपुरुषः।

यदि विशेषण विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हो तो विशेषण शब्द पुंलिङ्ग शब्द के समान हो जाता है. अर्थात् आकार ईकार आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द का जो चिह्न है वह नहीं रहता। यथा, दीर्घा यष्टिः, दीर्घ यष्टिः ; जीर्णा तरिः, जीर्णतरिः ; सती प्रवृत्तिः, सत्प्रवृत्तिः।

तत्पुरुष।

जिस स्थल में पूर्व पद द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी के मध्य से कोई विभक्ति युक्त, और पर पद प्रथमा विभक्ति युक्त हो तो उनको तत्पुरुष समास कहते हैं, यथा, गृहंगतः, गृहगतः, लोभेन जितः लोभजितः ; धनाय लोभः धनलोभः, सर्पात् भयं, सर्पभयम् , वृक्षस्य शाखा, वृक्षशाखा ; पुरुषेषु उत्तमः, पुरुषोत्तमः।

द्वन्द्व।

परस्पर विशेष्य विशेषण नहीं है इस प्रकार के प्रथमा विभक्ति युक्त दो अथवा अनेक पद का जो समास होता है उसका नाम द्वन्द्व समास है। यदि दो एक वचनान्त पद में द्वन्द्व समास हो तो अन्त का पद द्वि वचनान्त होता है और सब स्थल में बहु वचनान्त होता है। अन्त का शब्द जो लिङ्ग होता है द्वन्द्व समास करने से भी वही लिङ्ग रहता है। यथा, रामः लक्ष्मणः, रामलक्ष्मणौ ; भीमः अर्जुनः, भीमार्जुनौ ; नदी पर्वतः, नदीपर्वतौ ; फलं पुष्पम्, फलपुष्पे ; कन्दः मूलम् फलम्, कन्दमूलफलानि ; रूपं रसः गन्धः स्पर्शः शब्दः रूपरसगंधस्पर्शशब्दाः, यह समास इतरेतर द्वन्द्व कहा जाता है।

यदि प्राणी के अंग वाची अथवा बाजा के अंग वाची सेना के अंग वाची शब्दों के साथ द्वन्द्व समास करेंगे तब नित्य नपुंसक लिङ्ग और एक वचनही होता है ; यथा, पाणिश्च पादौ च पाणिपादम्, मार्दंगिकपाणविकम्, रथिकाश्वारोहम्, और प्राणी भिन्न जातिप्रधानवाची शब्दों का जब द्वन्द्व समास होता है तब भी नपुंसक लिङ्ग का एक वचन ही होता है, यथा, बदरामलकम्।

कभी २ द्वन्द्व समास करने से अन्त का शब्द कोई लिङ्ग हो पर नपुंसकलिङ्ग और एक वचनान्त हो जाता है यथा, हंसः कोकिलः हंसः कोकिलम्, पाणि पादौ, पाणिपादम्।

बहुव्रीहि ।

जब के एक पद से समास किया जाता है यदि इन के एक पदों का अर्थ बोध न होकर दूसरी वस्तु वा व्यक्ति का बोध होवे तो उस को बहुव्रीहि समास कहते हैं ; समास के समय बहुव्रीहि में यद् शब्द का एक पद रहता है । यथा, दीर्घौ बाहू यस्य, दीर्घबाहुः ; इस स्थल में दीर्घ दो बाहु न समझ कर बाहु विशिष्ट व्यक्ति का बोध होता है ; निर्मलम् जलं यस्याः सा निर्मलजला नदी, निर्मल जल न समझ कर निर्मल जल सहित नदी का बोध होता है ।

यदि दो स्त्रीलिङ्ग पद में बहुव्रीहि समास हो तो बहुधा पूर्व पद पुंलिङ्ग हो जाता है अर्थात् स्त्री लिङ्ग का चिह्न आकार ईकारादि नहीं रहता है, यथा निर्मला मतिर्यस्य निर्मलमतिः ; मृद्वी गतिर्यस्याः मृदुगतिः । बहुव्रीहिसमास करने से जो पद सिद्ध होता है वह विशेषण हो जाता है इस लिए विशेष्य के लिङ्ग विभक्ति और वचन प्राप्त हो जाता है ।

द्विगु ।

जिस स्थल में पूर्व पद संख्या वाचक शब्द और समाहार रहे अर्थात् अनेक वस्तु का बोधक होवे तो उनको समाहार द्विगु कहते हैं। समाहार भिन्न अन्य अर्थ में भी द्विगु करने से किसी २ स्थल में स्त्री लिङ्ग और ई हो जाती है, किसी २ स्थल में नपुंसक-लिङ्ग हो जाता है, यथा, त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः त्रिलोकी, इस स्थल में स्त्री लिङ्ग और ई हुई और त्रिलोकी कहने से तीन लोक का बोध होता है । त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः त्रिभुवनम् ।

अव्ययीभाव ।

सामीप्य, वीप्सा, अनतिक्रम, अभाव, पर्य्यन्त आदि अर्थ में जो समास होता है वह अव्ययीभाव कहा जाता है । जो के एक पद में समास होता है तिसके मध्य में प्रथम पद अव्यय शब्द कहा जाता है समास करने से अन्त का शब्द यदि अकारान्त हो तो उसका रूप पंचमी भिन्न और सब विभक्तियों में आकारान्त नपुं-सकलिङ्ग शब्द का प्रथमाविभक्ति एक वचन के समान होता है ;

इस के सिवाय सब जगह अव्यय शब्द के सदृश है, अर्थात् किसी विभक्ति का चिह्न नहीं रहता है; यथा, कूलस्य समीपे उपकूलम्, गृहे गृहे प्रतिगृहम्, शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति, विषस्य अभाव निर्विषम्, समुद्र पर्यन्तम, आसमुद्रम् ।

तद्धित प्रत्यय ।

अर्थ विशेष में शब्द के उत्तर त, त्व, वत् मत, आदि प्रत्यय होते हैं, उन को तद्धित कहते हैं। तद्धित प्रत्यय अनेक हैं उन में से के एक का विवरण संक्षेप से लिखा जाता है ।

त, त्व ।

भाव अर्थ समझाने से प्रातिपदिक के उत्तर त और त्व होता है। त प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग और त्व प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है । यथा प्रभुता, प्रभुत्वम, प्रभु का भाव ; लघुता, लघुत्वम, लघु का भाव ; पशुता पशुत्वम ; खलता ; खलत्वम् इत्यादि ।

वत् ।

सादृश्य अर्थ बोधक होने से प्रातिपदिक के उत्तर वत् होता है । इस प्रत्ययान्त शब्द अव्यय है। यथा चन्द्रवत चन्द्र के सदृश, पितृवत् पिता के सदृश, मातृवत् ; पुत्रवत् ; गुरुवत्, इत्यादि ।

मत् ।

जिसका अथवा जिसमे है इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर मत् होता है । यथा, जिस की बुद्धि है बुद्धिमान्, जिस की श्री है श्रीमान्, धीमान् ; अंशुमान् । अग्नि जिस में है, अग्निमान्, इत्यादि ।

इन् ।

जिसका अथवा जिसमे है इस अर्थ में एक से अधिक स्वर विशिष्ट अवर्णान्त शब्द के उत्तर विकल्प में इन् होता है । इन् होने से अन्त्य स्वर का लोप होता है । यथा ज्ञानी, गुणी, धनी, अपरं च ज्ञानवान् गुणवान्, धनवान् ।

विन् ।

जिसका अथवा जिसमे है इस अर्थ में असभागान्त प्रातिपदिक के उत्तर विन् होता है । यथा यशस् - यशस्वी, तेजस्—तेजस्वी,

तपस्वी, पयस्वी ; मायावी, मेधावी ।

तर ।

दो के मध्ये एक का उत्कर्ष प्रकाशक होने से प्रातिपदिक के उत्तर तर होता है । यथा दृढ़तरः, गुरुतरः, मृदुतरः ।

तम ।

अनेक के मध्ये एक का उत्कर्ष बोधक होने से प्रातिपदिक के उत्तर तम होता है । यथा अनेक में दृढ़, दृढ़तमः ; गुरुतमः, मृदुतमः ।

मय ।

विकार व्याप्ति और अवयव अर्थबोधक होने से प्रातिपदिक के उत्तर मय होता है । यथा स्वर्णमयम ; रजतमयम, लौहमयम । धूम से व्याप्त धूममयम, जलमयम, । दारु जिसका अवयव दारुमयम्, ऊर्णामयम्, काष्ठमयम् ।

धा ।

प्रकार अर्थबोधक होने से संख्यावाचक प्रातिपदिक के उत्तर धा होता है । यथा एक प्रकार एकधा, द्वि प्रकार द्विधा ; त्रिधा, चतुर्धा ।

तस ।

पञ्चमी और सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से तस होता है । यथा पञ्चमी—गृहात् गृहतः, ग्रामात ग्रामत, एकस्मात् एकतः । सप्तमी—अग्रे, अग्रतः, आदौ आदितः, अन्ते अन्ततः ।

त्र ।

सर्वनाम प्रातिपदिक के सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प में त्र होता है । यथा सर्वस्मिन् सर्वत्र, अन्यस्मिन् अन्यत्र, परस्मिन् परत्र ।

था ।

प्रकारार्थ बोधक होने से सर्वनाम को तृतीया विभक्ति के स्थान में था होता है । यथा अन्येन प्रकारेण अन्यथा, सर्वैः प्रकारैः सर्वथा ; इतरेण प्रकारेण इतरथा ; उभयेन प्रकारेण उभयथा ।

तन ।

उत्पत्ति अथवा घटना बोधक होने से कालवाचक अव्यय शब्द के उत्तर तन् होता है । यथा, अद्य अद्यतनम्, पुरा, पुरातनम्, इदानीम्, इदानीन्तनम्, अधुना अधुनातनम् ।

चित्, चन ।

विभक्त्यन्त किम् शब्द के उत्तर चित् और चन होता है । यथा, कः कश्चित्, कश्चन ; किम् किञ्चित्, किञ्चन ; केचित्, केचन ; कचित्, कचन ; कुत्रचित्, कुत्रचन ; कुतश्चित्, कुतश्चन ।

सरल संस्कृत पाठ ।

प्रथमः पाठः ।

अश्वो धावति । गौः शब्दायते । सूर्य्यस्तपति । चन्द्र उदेति । वायुर्व्वाति । नदी वहति । फलं पतति । पत्रं चलति । पीड़ा वर्द्धते । बालको रोदिति । वृष्टिर्भवति । मेघो गर्जति । पुष्पं शोभते । नटो नृत्यति । गायको गायति । शिशुः क्रीड़ति । युवा हसति । वृद्धो निद्राति । चौरः पलायते ।

द्वितीयः पाठः ।

स ग्रामं गच्छति । अहं चन्द्रं पश्यामि । पिता पुत्रमाह्वयति । पुत्रः पितरं प्रणमति । गुरुः शिष्यमध्यापयति । शिष्यो गुरुं पृच्छति । शिशुः शय्यायां शेते । राजा प्रजाः पालयति । स दूरङ्गमिष्यति । यूयं कुत्रगमिष्यथ । अहं तत्र गमिष्यामि । त्वं कथं रोदिषि । बीजादङ्कुरो जायते । अश्वमारुह्य गच्छति । तन्तुवायो वस्त्रं वयति । गोपो दुग्धं दोग्धि । गौः शष्पाण्यत्ति । विद्या विनयं ददाति ।

तृतीयः पाठः ।

भृत्यः प्रभोराज्ञां पालयति । प्रभुर्भृत्याय वेतनं ददाति । बालको यत्नेन विद्यामर्ज्जयति, स क्लेशं सोढुं शक्नोति । दशरथः पुत्रशोकेन प्राणांस्तत्याज । रामः समुद्रे सेतुं बबन्ध । ग्रीष्मकाले रविरति तीक्ष्णो भवति । शरदि नभो मण्डलं निर्मलं भवति । वोपदेवो मुग्धबोधं व्याकरणं रचितवान् । केनापि सह कलहो न कर्त्तव्यः । पक्षिणो रात्रौ वृक्षशाखायां निवसन्ति । साधवः सर्व्वभूतेषु दया कुर्व्वन्ति । कालिदासो बहूनि काव्यानि रचितवान् । अर्ज्जुनो बाहुबलेन पृथिवीमजयत् । युधिष्ठिरः सदा सत्यमुवाच । उद्योगी पुरुषो लक्ष्मीमुपैति, कापुरुषा एव दैवमवलम्बन्ते ।

चतुर्थः पाठः ।

पाटलिपुत्रनगरे चन्द्रगुप्तो नाम राजा बभूव । चाणक्यश्चन्द्रगुप्तस्य अमात्य आसीत् । परशुरामः पृथिवीं निःक्षत्रियामकरोत् । धृतराष्ट्रो जन्मान्ध आसीत् तेन राज्यं न प्राप । राम पितुरादेशात् सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम । भीमो गदाघातेन दुर्योधनस्य ऊरू बभंज । चन्द्रं दृष्ट्वामनसि महान् हर्षो जायते । आकाशे रजन्यामसंख्यानि नक्षत्राणि दृश्यन्ते । रात्रौ प्रभातायां पूर्व्वस्यां दिशि सूर्य्यः प्रकाशते । वसन्त काले तरुषु लतासु च नवपल्लवानि कुसुमानि च जायन्ते ।

पञ्चमः पाठः ।

यो बाल्ये विद्यां नोपार्ज्जयति स चिराय मूर्खो भवति । यो दयालुर्भवति स दीनेभ्यो धनं ददाति । यः कृपणो भवति स आत्मानमपि वञ्चयति । यो बन्धुवाक्यं न शृणोति स विपदमाप्नोति । पण्डिताः शास्त्रालोचनया कालं यापयन्ति । मूर्खा निद्रया कलहेन च समयमतिवाहयन्ति । यः शत्रुषु विश्वसिति स आत्मनो मृत्युमाकर्षति । यो विपदि सहायो भवति स एव यथार्थबन्धुः । यो दुर्जनेन सह मैत्रीं करोति स पदेपदे विपदमाप्नोति । यस्य कुलं शीलं च न ज्ञायते न तस्मिन् सहसा विश्वसनीयम् । यत्नेन विना किमपि न सिध्यति तस्मात् सर्व्वेषु कार्य्येषु यत्नः करणीयः ।

षष्ठः पाठः ।

सदा सत्यं ब्रूयात् सर्वे सत्यवादिनमाद्रियन्ते तस्य वचसि विश्वासं कुर्वन्ति च, यो हि मिथ्यावादी भवति न कोऽपि तस्मिन् विश्वसिति । सदा प्रियं ब्रूयात्, प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति ।

विद्या हि परमं धनम्, यस्य विद्याधनमस्ति स सदा सुखेन कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विना विद्या न भवति तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनम् ।

आलस्यम् सर्वेषाम् दोषाणामाकरः, अलसा विद्यामुपार्जयितुम् न शक्नुवन्ति धनम् न लभन्ते । अलसानाम् चिरमेव दुःखम्, तस्मादालस्यम् परित्यजेत् ।

मातापितरौ पुत्रार्थम् बहून् क्लेशान् सहेते तस्मात् तयोर्नित्यम्

प्रियम् कुर्यात् । कायेन मनसा वाचा तयोर्हितम् चिन्तयेत्, तयोः सततम् भक्तिमान् भवेत्, प्राणात्ययेऽपि तयोरवमानना न कार्य्या, तयोरनुमतिम् विना न किञ्चित् कर्म कर्तव्यम् ।

सप्तमः पाठः ।

अतिभोजनम् रोगमूलम् आयुः क्षयकरम्, तस्मादतिभोजनम् परिहरेत् ।

योऽस्मानध्यापयति सोऽस्माकं परमो गुरुः, सहि पितृवत् पूजनीयः, विद्यादाता जन्मदाता द्वाविव समानौ सम्मानीयौ च ।

क्रोधं यत्नेन वर्जयेत्, क्रोधवशो न परुषं भाषेत न प्रहरेत्, क्रोधो हि महान् शत्रुः ।

सर्वं परवशं दुःखम्, सर्वमात्मवशं सुखं, एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणं । परहिंसायां परापकारे च बुद्धिर्न कार्या, तयोः सम पापं नास्ति । यथाशक्ति परेषामुपकारं कुर्यात्, परोपकारो हि परमो धर्मः । अहंकारं परिहरेत्, नाहङ्कारात् परो रिपुः ।

सन्तुष्टस्य सदा सुखम्, य आत्मनः सुखमन्विच्छेत् स सन्तोषमवलम्बेत् ।

सन्तोषमूलं हि सुखम् ।

सम्पूर्णम् ।

कल्पना करके समझ सकते हैं, अनुभव नहीं कर सकते। परंतु उस कल्पनाको दृष्टिमें रखकर हम 'मैं' पनेको दिन-दिन घटाते जायं तो अंतमें गुणातीतकी अवस्थाके समीप पहुंचकर उसकी झांकी कर सकते हैं। गुणातीत अपनी स्थितिका अनुभव करता है, वर्णन नहीं कर सकता। जो वर्णन कर सकता है वह गुणातीत नहीं है, क्योंकि उसमें अहंभाव मौजूद है। जिसे सब लोग सहजमें अनुभव कर सकते हैं वह शांति, प्रकाश, 'धांधल'—प्रवृत्ति और जड़ता—मोह है। गीतामें स्थान-स्थानपर इसे स्पष्ट किया है कि सात्त्विकता गुणातीतके समीप-से-समीपकी स्थिति है। इसलिए मनुष्यमात्रका प्रयत्न सत्त्वगुणके विकास करनेका है। यह विश्वास रखे कि उसे गुणातीतता अवश्य प्राप्त होगी।

जो एकनिष्ठ भक्तियोगद्वारा मुझे सेता है वह इन गुणोंको पार करके ब्रह्मरूप बननेयोग्य होता है। २६

और ब्रह्मकी स्थिति मैं ही हूं, शाश्वत मोक्षकी स्थिति मैं हूं। वैसे ही सनातन धर्मकी और उत्तम सुखकी स्थिति भी मैं ही हूं।

ॐ तत्सत्

इति श्रीमद्भगवद्गीतारूपी उपनिषद अर्थात् ब्रह्म-